तुहफ़ा क़ैसरिया

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: तुहफ़ा क़ैसरिया
Name of book	: Tuhfa Qaisariya
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
टाईप, सैटिंग	: महवश नाज़
Type, Setting	: Mahwash Naaz
संस्करण	: प्रथम (हिन्दी) अगस्त 2018 ई०
Edition	: 1st Edition (Hindi) August 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए. और मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रीवियु आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

तुहफ़ा क़ैसरिया

चूंकि हज़रत मसीह मौऊद व महदी मा'हूद के अवतरित होने का उद्देश्य ख़ुदा की तौहीद (एकेश्वरवाद) को प्रकाशित करने और ख़ुदा के सन्देश को लोगों तक पुहंचाना था। इसलिए आप ने महारानी विक्टोरिया को डायमण्ड जुबली के आयोजन पर भी जो माह जून 1897 में बड़ी धूम-धाम से मनाई जाने वाली थी इस्लाम के प्रचार का एक पहलू निकाल लिया और **"तुहफ़ा क़ैसरिया"** के नाम से एक पुस्तिका 25 मई 1897 ई. को प्रकाशित की। इस पुस्तिका में जुबली के आयोजन पर मुबारकबाद के अतिरिक्त अत्युत्तम शैली और दार्शनिक ढंग में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और इस्लाम की सच्चाई की अभिव्यक्ति और उन सिद्धान्तों का वर्णन किया है जो विश्व-शान्ति तथा वैश्विक भाईचारे की बुनियाद बन सकते हैं तथा इस्लामी शिक्षा का खुलासा वर्णन करके महामहिम महारानी को लन्दन में एक धर्म महोत्सव आयोजित कराने की ओर ध्यान दिलाया और फ़रमाया कि इस से इंग्लैण्ड निवासियों को इस्लाम के संबंध में सही जानकारियाँ प्राप्त होंगी। फिर आप ने ईसाइयों की उस आस्था का कि मसीह सलीब पर मृत्यु पा कर लानती हुआ, ख़राबी और बुराई प्रकट करके महामहिम महारानी से निवेदन किया है कि पैलातूस ने यहूदियों के भय से एक अपराधी बंधक को तो छोड़ दिया और यसू को जो निर्दोष था न छोड़ा। किन्तु हे महारानी! इस साठ वर्षीय जुबली

के समय जो प्रसन्नता का समय है तू यसू को छोड़ने के लिए प्रयास कर और यसू मसीह के सम्मान को उस लानत के दाग़ से जो उस पर लगाया जाता है अपनी मर्दाना हिम्मत से पवित्र करके दिखला। आपने अपने दावे की सच्चाई में महामहिम महारानी को निशान दिखाने का वादा किया बशर्ते कि निशान देखने के बाद आप का सन्देश स्वीकार कर लिया जाए और निशान प्रकट न होने की अवस्था में अपना फांसी दे दिया जाना स्वीकार कर लिया और फ़रमाया- यदि कोई निशान प्रकट न हो और मैं झूठा निकलूँ तो मैं इस दण्ड पर राज़ी हूं कि महामहिम के सिंहासन के आगे फांसी दिया जाऊँ। और यह सब विनती इसलिए है कि काश हमारी उपकारी महामहिम महारानी को आकाश के ख़ुदा की ओर ख़्याल आ जाए, जिस से इस युग में ईसाई धर्म अनभिज्ञ है।

जलसा अहबाब

20 जून 1897 ईसवी को क़ादियान में भी डायमंड जुबली के आयोजन पर एक सामान्य जलसा किया गया जिस में सम्मिलित होने के लिए बाहर से भी लोग आए और गवर्नमेंट के आदेशानुसार मुबारकबाद का रिजोल्यूशन पास करके तार के द्वारा वायसराय हिंद को भेजा गया और तोहफा क़ैसरिया की कुछ कापियां अत्यंत सुंदर जिल्द करवा कर उनमें से एक मलिका विक्टोरिया क़ैसरिया-ए-हिंद की सेवा में भेजने के लिए डिप्टी कमिश्नर जिला गुरदासपुर को और एक वायसराय गवर्नर जनरल को और एक जनाब लेफ्टिनेंट गवर्नर पंजाब को भेजी गई और सामान्य जलसा में 6 भाषाओं में जो दुआ की गई उसमें विशेष रूप से यह दुआ भी की गई थी हे सर्वशक्तिमान खुदा हम तेरे अत्यंत सामर्थ्य पर नजर करके एक और दुआ के लिए तेरे सेवा में हिम्मत करते हैं कि हमारी उपकारी कैसर-ए-हिंद को सृष्टि पूजा के अंधकार से छुड़ा कर ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पर उसका अन्त कर।

(जलसा अहबाब रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 12 पृष्ठ 290)

इस जलसा अहबाब का पूर्ण वृतान्त इस जिल्द के पृष्ठ 285 से 314 में वर्णित है।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

मुबारकबादी का पत्र

उस व्यक्ति की ओर से है जो यसू मसीह के नाम भिन्न-भिन्न प्रकार की बिदअतों से संसार को छुड़ाने के लिए आया है, जिस का उद्देश्य यह है कि अमन और नर्मी के साथ संसार में सच्चाई स्थापित करे तथा लोगों को अपने स्रष्टा से सच्चा प्रेम और इबादत का तरीक़ा सिखाए और अपने बादशाह आदरणीय महारानी से जिसकी वह प्रजा हैं आज्ञापालन का सच्चा तरीक़ा समझाए तथा मानव जाति में परस्पर सच्ची सहानुभूति करने का पाठ पढ़ाए और अहंकारपूर्ण वैरों और आवेगों को मध्य से समाप्त करे तथा एक पवित्र मैत्री को ख़ुदा के नेक नीयत बन्दों में स्थापित करे जिसमें कपट की मिलावट न हो और यह लेख कृतज्ञता का एक उपहार है कि जो महामहिम क़ैसरा हिन्द आदरणीया महारानी वालिए इंगलिस्तान-व-हिन्द 'उनका सौभाग्य सदैव रहे' की सेवा में साठ वर्षीय जुबली बतौर मुबारकबाद प्रस्तुत किया गया है।

मुबारक! मुबारक!! मुबारक!!!

उस ख़ुदा का धन्यवाद जिसने आज हमें यह महान प्रसन्नता का दिन दिखाया कि हमने अपनी आदरणीय महारानी क़ैसरा हिन्द-व-इंगलिस्तान की साठ वर्षीय जुबली को देखा। इस दिन के आने से जितनी प्रसन्नता हुई उसका कौन अनुमान कर सकता है? हमारी उपकारी क़ैसरा मुबारका को हमारी ओर से ख़ुशी और कृतज्ञता से भरपूर मुबारकबाद पहुँचे। ख़ुदा आदरणीय महारानी को सदैव प्रसन्न रखे!

वह ख़ुदा जो पृथ्वी को बनाने वाला और आकाशों को ऊँचा करने वाला तथा चमकते हुए सूर्य एवं चन्द्रमा को हमारे लिए काम में लगाने वाला है, उसकी चौखट पर हम दुआ करते हैं कि हमारी आदरणीया महारानी क़ैसरा हिन्द को जो अपनी प्रजा की विभिन्न क़ौमों को दया रूपी गोद में लिए हुए है। जिसके एक अस्तित्व से करोड़ों लोगों को आराम पहुँच रहा है। देर तक सलामत रखे। और ऐसा हो कि जुबली के जल्से के आयोजन पर जिसकी ख़ुशी से करोड़ों हृदय ब्रिटिश भारत और इंग्लेण्ड के हर्ष के जोश में उन फूलों के समान हरकत कर रहे हैं जो प्रात: काल की शीतल समीर से खिल कर पक्षियों के समान अपने परों को हिलाते हैं। जिस ज़ोर-शोर से ज़मीन मुबारकबादी के लिए उछल रही है, इसी प्रकार आकाश भी अपने सूर्य, चन्द्रमा और अपने सम्पूर्ण सितारों के साथ मुबारकबाद दे और निस्स्पृह कृपा ऐसा करे जैसा कि हमारी महामहिम उपकारी महारानी हिन्द और इंग्लेण्ड की शासक अपनी प्रजा के समस्त वृद्धों तथा बच्चों के हृदयों में लोकप्रिय है, वैसा ही आकाशीय फ़रिश्तों के हृदयों में भी लोकप्रिय हो जाए। वह शक्तिमान जिसने उसे असंख्य सांसारिक नेमतें

प्रदान कीं धार्मिक बरकतों से भी उसे मालामाल करे। और दयालु जिसने इस संसार में उसे प्रसन्न रखा, परलोक में भी उसके लिए प्रसन्नता के सामान प्रदान करे। ख़ुदा के कार्यों से क्या दूर है कि ऐसा अस्तित्व जिस से करोड़ों अपितु असंख्य नेकी के कार्य हुए और हो रहे हैं उसके हाथ से यह अन्तिम नेकी भी हो जाए कि इंग्लेण्ड को रहम तथा अमन के साथ इन्सान की उपासना करने से पवित्र कर दिया जाए ताकि फ़रिश्तों की रूहें भी बोल उठें कि हे एकेश्वरवादी सिद्दीक़ा तुझे आकाश से भी मुबारकबाद जैसी कि पृथ्वी से!!

यह दुआ करने वाला जो संसार में इस मसीह के नाम से आया है। इसी प्रकार महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द और उस के युग से गर्व करता है। जैसा कि सय्यदुलकौनैन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नौशेर्वां आदिल के युग से गर्व किया था। तो यद्यपि जल्सा जुबली के मुबारक उत्सव पर प्रत्येक व्यक्ति पर आवश्यक है कि महामहिम महारानी के उपकारों को याद करके निष्कपट दुआओं के साथ मुबारकबाद दे और क़ैसरा हिन्द-व-इंग्लेंड के दरबार में कृतज्ञता का उपहार प्रस्तुत करे। किन्तु मैं देखता हूं कि मुझ पर सर्वाधिक अनिवार्य है। मेरे लिए ख़ुदा ने पसन्द किया कि मैं आकाशीय कार्रवाई के लिए महामहिम महारानी की शान्तिपूर्ण हुकूमत की शरण लूं। अत: ख़ुदा ने मुझे ऐसे समय में तथा ऐसे देश में मामूर किया कि सुरक्षा के लिए हज़रत क़ैसरा मुबारका का शासन काल एक फ़ौलादी किले का प्रभाव रखता है। जिस अमन के साथ मैंने इस देश में रहकर सच्चाई को फैलाया उस का धन्यवाद करना मुझ पर सर्वाधिक अनिवार्य है। यद्यपि मैंने इस कृतज्ञता को प्रकट

करने के लिए बहुत सी पुस्तकें उर्दू, अरबी और फ़ारसी में लिख कर उनमें महामहिम महारानी के समस्त उपकारों को जो ब्रिटिश इण्डिया के मुसलमानों के साथ है इस्लामी जगत में फैलाया है। और प्रत्येक मुसलमान को सच्चे आज्ञापालन तथा फर्माबरदारी की प्रेरणा दी है। परन्तु मेरे लिए आवश्यक था कि यह अपना समस्त कारनामा महामहिम महारानी के सामने भी पहुँचाऊँ। अत: इसी कारण आज मुझे महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द की जुबली के मुबारक अवसर पर जो सच्ची वफ़ादार प्रजा के लिए बेशुमार शुक्र और प्रसन्न का स्थान है। उसके हार्दिक उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए हिम्मत हुई है।

मैं इस बात को व्यक्त करना भी अपनी पहचान कराने के उद्देश्य से आवश्यक देखता हूं कि मैं महामहिम महारानी की प्रजा में से पंजाब के एक प्रतिष्ठित ख़ानदान में से एक व्यक्ति हूं जो मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी के नाम से प्रसिद्ध हूं। मेरे पिता श्री का नाम मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा और उनके पिता का नाम मिर्ज़ा अता मुहम्मद और उनके पिता का नाम मिर्ज़ा गुल मुहम्मद था। यह अन्तिम कथित इस युग से पूर्व देश के शासकों में से थे। मुझे ख़ुदा ने जैसा कि आगे वर्णन होगा अपनी सेवा में ले लिया, जैसा कि वह अपने बन्दों से सदैव से बात करता आया है, मुझे भी उसने अपने वार्तालाप एवं संबोधन का सम्मान प्रदान किया। अत: उन समस्त सिद्धान्तों में से जिन पर मुझे स्थापित किया गया है एक यह है कि ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है कि संसार में नबियों के माध्यम से जितने धर्म फैल गए हैं और सुदृढ हो गए है और संसार के एक भाग पर छा गए हैं और एक आयु पा गए हैं तथा उन पर एक युग गुज़र गया है उनमें से

कोई धर्म भी अपनी असलियत की दृष्टि से झूठा नहीं और न उन नबियों में से कोई नबी झूठा है। क्योंकि ख़ुदा की सुन्नत प्रारम्भ से इसी प्रकार से चली आई है कि वह ऐसे नबी के धर्म को जो ख़ुदा पर झूठ बांधता है और ख़ुदा की ओर से नहीं आया अपितु दिलेरी से अपनी ओर से बातें बनाता है कभी फलने-फूलने नहीं देता और ऐसा व्यक्ति जो कहता है कि मैं ख़ुदा की ओर से हूं। हालांकि ख़ुदा भली भांति जानता है कि वह उसकी ओर से नहीं है। ख़ुदा उस धृष्ट को मार देता है और उसका समस्त कारोबार अस्त-व्यस्त किया जाता है और उसकी समस्त जमाअत तितर-बितर की जाती है और उसका पिछला हाल पहले से अधिक बुरा हो जाता है। क्योंकि उसने ख़ुदा पर झूठ बोला और दिलेरी से ख़ुदा पर झूठ बाँधा। अतः ख़ुदा उसे वह प्रतिष्ठा नहीं देता जो सच्चों को दी जाती है और न वह मान्यता और दृढ़ता प्रदान करता है जो सच्चे नबियों के लिए निर्धारित है।

और यदि प्रश्न यह हो, कि यदि यही बात सच है तो फिर संसार में ऐसे धर्म क्यों फैल गए जिन की किताबों में इंसानों या पत्थरों या फ़रिश्तों या सूर्य और चन्द्रमा, सितारों, अग्नि, जल तथा वायु इत्यादि सृष्टि को ख़ुदा करके माना गया है? तो इसका उत्तर यह है कि ऐसे धर्म या तो उन लोगों की ओर से हैं जिन्होंने नबी होने का दावा नहीं किया और न इल्हाम तथा वह्यी के दावेदार हुए अपने विचार और बुद्धि की ग़लती से सृष्टि की उपासना की ओर झुक गए और या कुछ धर्म ऐसे थे कि वास्तव में ख़ुदा के किसी सच्चे नबी की ओर से उनकी बुनियाद थी परन्तु समय गुज़रने से उनकी शिक्षा लोगों पर संदिग्ध हो गई और कुछ रूपकों और अवास्तविक बातों को

वास्तविकता पर चरितार्थ करके वे लोग सृष्टि-उपासना में पड़ गए। परन्तु वास्तव में वे नबी ऐसा धर्म नहीं सिखाते थे। तो ऐसी स्थिति में उन नबियों का दोष नहीं क्योंकि वे सही और पवित्र शिक्षा लाए थे। अपितु मूर्खों ने बोधभ्रम से उन के कलाम के विपरीत अर्थ लिए। तो जिन मूर्खों ने ऐसा किया उन्होंने यह दावा तो नहीं किया कि हम पर ख़ुदा का कलाम (वाणी) उतरा है और हम नबी हैं अपितु नुबुव्वत के कलाम को विवेचन की ग़लती से उन्होंने उल्टा समझा। इसलिए यह गलतियां और गुमराहियाँ यद्यपि गुनाह में सम्मिलित हैं और ख़ुदा तआला की दृष्टि में अप्रिय हैं। परन्तु उनके फैलने को ख़ुदा तआला इस प्रकार से नहीं रोकता जिस प्रकार उस मुफ़्तरी की कार्रवाई को रोकता है जो ख़ुदा पर झूठ बांधता है। कोई हुकूमत चाहे ज़मीनी है चाहे आकाशीय ऐसे मुफ़्तरी को मुहलत नहीं देती जो एक झूठा क़ानून बना कर फिर हुकूमत की ओर सम्बद्ध करता है कि वह कानून इस सरकार से पास होकर निकला है और न कोई हुकूमत वैध रखती है कि कोई व्यक्ति झूठे तौर पर सरकारी कर्मचारी बन कर अवैध हुकूमत को कार्यान्वित करे। और ऐसा प्रकट करे कि वह सरकार का कोई पदाधिकारी हैं, हालांकि वह पदाधिकारी तो क्या किसी निम्न स्तर का कर्मचारी भी नहीं।

अत: यही कानून ख़ुदा तआला की अनादि सुन्नत में सम्मिलित है कि वह नुबुव्वत के झूठे दावेदार को छूट नहीं देता अपितु ऐसा व्यक्ति शीघ्र पकड़ा जाता और अपने दण्ड को पहुँच जाता है। इस नियम की दृष्टि से हमें चाहिए कि हम उन समस्त लोगों को सम्मान की दृष्टि से देखें और उन्हें सच्चा समझें जिन्होंने किसी युग में नुबुव्वत

का दावा किया, और फिर उनका वह दावा जड़ पकड़ गया तथा उन का धर्म संसार में फैल गया, सुदृढ़ हो गया और एक आयु पा गया। यदि हम उन की धार्मिक किताबों में ग़लतियां पाएं या धर्म के अनुयायियों को दुराचारों में लिप्त देखें तो हमें नहीं चाहिए कि वह सब अफ़सोस का दाग़ उन धर्मों के प्रवर्तकों पर लगा दें। क्योंकि किताबों का अक्षरांतरित हो जाना संभव है, विवेचन की ग़लतियों का व्याख्याओं में दाख़िल हो जाना संभव है। परन्तु यह कदापि संभव नहीं कि कोई व्यक्ति खुला-खुला ख़ुदा पर झूठ बांधे और कहे कि मैं उस का नबी हूं और अपना कलाम प्रस्तुत करे और कहे कि "यह ख़ुदा का कलाम है।" हालांकि वह न नबी हो और न उस का कलाम ख़ुदा का कलाम हो और फिर ख़ुदा उसको सच्चों के समान छूट दे और सच्चों की तरह उसकी मान्यता फैलाए।

इसलिए यह सिद्धांत अत्यन्त सही, बहुत मुबारक और इसके बावजूद मैत्री की बुनियाद डालने वाला है कि हम ऐसे समस्त नबियों को सच्चे नबी ठहराएं जिन का धर्म जड़ पकड़ गया और आयु पा गया और उसमें करोड़ों लोग आ गए। यह सिद्धान्त नेक सिद्धान्त है। यदि इस सिद्धान्त का समस्त संसार पाबन्द हो जाए तो हज़ारों उपद्रव और धर्म का अपमान हो सार्वजनिक शांति के विरोधी हैं समाप्त हो जाएँ। यह तो स्पष्ट है कि जो लोग किसी धर्म के मानने वालों को एक ऐसे व्यक्ति का अनुयायी समझते हैं जो उनकी समझ में वास्तव में झूठा और मुफ़्तरी है तो वे वे इस विचार से बहुत से फ़ित्नों की बुनियाद डालते हैं और वे अवश्य अपमान के अपराधों को करने वाले होते हैं और उस नबी की शान में नितान्त धृष्टता के शब्द बोलते हैं

और अपनी बातों को ग़ालियों की सीमा तक पहुंचाते हैं। और मैत्री तथा प्रजा के सार्वजनिक अमन में विघ्न डालते हैं। हालांकि उसका यह विचार सर्वथा ग़लत होता है। और वह अपने धृष्टतापूर्ण कथनों में खुदा की नज़र में अत्याचारी होते हैं। खुदा जो दयालु-कृपालु है वह कदापि पसंद नहीं करता कि एक झूठे को अकारण उन्नति देकर और उसके धर्म भी जड़ जमाकर लोगों को धोखे में डालें और न वैध रखता है कि एक व्यक्ति मुफ़्तरी और झूठा होने के बावजूद संसार की दृष्टि में सच्चे नबियों के बराबर हो जाए।

अत: यह सिद्धांत अत्यन्त प्रिय और शान्तिदायक और मैत्री की बुनियाद डालने वाला तथा नैतिक परिस्थितियों को सहायता देने वाला है कि हम उन समस्त नबियों को सच्चा समझ लें जो दुनिया में आए। चाहे हिंदुस्तान में प्रकट हुए या फ़ारस में या चीन में या किसी अन्य देश में। ख़ुदा ने करोड़ों दिलों में उनका सम्मान और प्रतिष्ठा बैठा दी और उनके धर्म की जड़ स्थापित कर दी तथा कई शताब्दियों तक वह धर्म चला आया। यही सिद्धान्त है जो क़ुरआनने हमें सिखाया। इसी सिद्धान्त की दृष्टि से हम प्रत्येक धर्म के पेशवा को जिन के जीवन चरित्र इस परिभाषा के अन्तर्गत आ गए हैं सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। चाहे वे हिन्दुओं के धर्म के पेशवा हों या फारसियों के धर्म के या चीनियों के धर्म के या यहूदियों के धर्म के या ईसाइयों के धर्म के। परन्तु अफ़सोस कि हमारे विरोधी हम से यह व्यवहार नहीं कर सकते। और ख़ुदा का यह पवित्र तथा अपरिवर्तनीय क़ानून उन को याद नहीं कि वे झूठे नबी को वह बरकत और सम्मान नहीं देते जो सच्चे को देता है। झूठे नबी का धर्म जड़ नहीं पकड़ता और न

आयु पाता है जैसा कि सच्चे का जड़ पकड़ता और आयु पाता है। तो ऐसी आस्था वाले लोग जो क़ौमों के नबियों को झूठा ठहरा कर बुरा कहते रहते हैं हमेशा मैत्री और अमन के शत्रु होते हैं। क्योंकि क़ौमों के बुज़ुर्गों को गालियां निकालना इस से बढ़कर उपद्रव फैलाने वाली और कोई बात नहीं। कभी मनुष्य मरना भी पसन्द करता है परन्तु नहीं चाहता कि उसके पेशवा को बुरा कहा जाए। यदि हमें किसी धर्म की शिक्षा पर ऐतराज़ हो तो हमें नहीं चाहिए कि उस धर्म के नबी के सम्मान पर प्रहार करें और यह कि उसे बुरे शब्दों से याद करें। अपितु चाहिए कि उस कौम की वर्तमान कार्य प्रणाली पर ऐतराज़ करें और विश्वास रखें कि वह नबी जो ख़ुदा तआला की ओर से करोड़ों मनुष्यों में सम्मान पा गया तथा सैकड़ों वर्षों से उसकी मान्यता चली आती है। यही शक्तिशाली प्रमाण उसके ख़ुदा की ओर से होने का है। यदि वह ख़ुदा का मान्य न हो तो इतना सम्मान न पाता। झूठे को सम्मान देना और करोड़ों लोगों में उसके धर्म को फैलाना और लम्बे समय तक उसके झूठे धर्म को सुरक्षित रखना ख़ुदा की आदत नहीं है। तो जो धर्म दुनिया में फैल जाए और जम जाए तथा सम्मान एवं आयु पा जाए वह अपनी असलियत की दृष्टि से झूठा कदापि नहीं हो सकता। इसलिए यदि वह शिक्षा आपत्तिजनक है तो इसका कारण या तो यह होगा कि उस नबी के निर्देशों में अक्षरांतरण किया गया है और या यह कारण होगा कि उन निर्देशों की व्याख्या करने में ग़लती हुई है और या यह भी हो सकता है कि हम स्वयं ऐतराज़ करने में सच पर न हों। अत: देखा जाता है कि कुछ पादरी लोग अपनी समझ की कमी के कारण पवित्र क़ुरआन की उन बातों पर ऐतराज़ करते हैं

जिन को तौरात में सही और ख़ुदा की शिक्षा मान चुके हैं। तो अब ऐसा ऐतराज़ स्वयं अपनी ग़लती या जल्दबाज़ी होती है।

सारांश यह कि दुनिया की भलाई, अमन और मैत्री संयम और ख़ुदा का भय इसी सिद्धान्त में है कि हम उन नबियों को झूठा कदापि न ठहराएं जिन की सच्चाई के बारे में करोड़ों लोगों की सैकड़ों वर्षों से राय स्थापित हो चुकी हो और ख़ुदा के समर्थन हमेशा से उनके साथ रहे हों। और मैं विश्वास रखता हूं कि सत्याभिलाषी चाहे वह एशियाई हो चाहे यूरोपियन हमारे इस सिद्धान्त को पसन्द करेगा और आह खींचकर कहेगा कि अफ़सोस हमारा सिद्धान्त ऐसा क्यों न हुआ।

मैं इस सिद्धान्त को इस उद्देश्य से हज़रत महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द-व-इंगलिस्तान की सेवा में प्रस्तुत करता हूं कि अमन को दुनिया में फैलाने वाला केवल यही एक सिद्धान्त है। इस्लाम गर्व कर सकता है कि इस प्यारे और चित्ताकर्षक सिद्धांत को विशेष तौर पर अपने साथ रखता है। क्या हमें वैध है कि हम ऐसे बुज़ुर्गों की मान-हानि करें कि ख़ुदा की कृपा ने एक दुनिया को उनका आज्ञाकारी कर दिया और सैकड़ों वर्षों से बादशाहों की गर्दन उनके आगे झुकती चली आई? क्या हमें वैध है कि हम ख़ुदा के बारे में कुधारणा करें कि वह झूठों को सच्चों की प्रतिष्ठा देकर और सच्चों के समान करोड़ों लोगों का पेशवा बना कर तथा उन के धर्म को एक लम्बी आयु देकर तथा उनके धर्म के समर्थन में आकाशीय निशान प्रकट करके दुनिया को धोखा देना चाहता है? यदि ख़ुदा ही हमें धोखा दे तो फिर हम सत्य और असत्य में कैसे अन्तर कर सकते हैं?

यह बहुत आवश्यक मामला है कि झूठे नबी की प्रतिष्ठा एवं

वैभव, मान्यता और श्रेष्ठता ऐसी नहीं फैलनी चाहिए जैसा कि सच्चे की। और झूठों की योजनाओं में वह शोभा पैदा नहीं होनी चाहिए जैसा कि सच्चे के कारोबार में पैदा होनी चाहिए। इसलिए सच्चों की पहली निशानी यही है कि ख़ुदा की अनश्वर सहायताओं का सिलसिला उसके साथ हो और ख़ुदा उसके धर्म के पौधे को करोड़ों दिलों में लगा दे और आयु प्रदान करे। अत: जिस नबी के धर्म में हम ये निशानियां पाएं हमें चाहिए कि हम अपनी मृत्यु और न्याय के दिनों को याद करके ऐसे महान पेशवा का अनादर न करें अपितु सच्ची शिक्षा और सच्चा प्रेम करें। अत: यह वह पहला सिद्धान्त है जो ख़ुदा ने हमें सिखाया है, जिसके माध्यम से हम एक बड़े नैतिक भाग के वारिस हो गए हैं।

और वह दूसरा सिद्धान्त जिस पर मुझे स्थापित किया गया है वह जिहाद के उस ग़लत मामले का सुधार है जो कि कुछ क़ानून मुसलमानों में प्रसिद्ध हैं। इसलिए मुझे अल्लाह तआला ने समझा दिया कि जिन तरीकों को आजकल जिहाद समझा जाता है वे क़ुरआनकी शिक्षा से सर्वथा विपरीत हैं। निस्सन्देह पवित्र क़ुरआन में लड़ाइयों का आदेश हुआ था जो मूसा की लड़ाइयों से अधिक उचित और यशु बिन नून की लड़ाइयों से अधिक रुचि (कर) था तथा उसका आधार केवल इस बात पर था कि जिन्होंने मुसलमानों को क़त्ल करने के लिए अकारण तलवारें उठाईं और अकारण वध किए और अत्याचार को चरम सीमा तक पहुँचाया उनको तलवारों से ही क़त्ल किया जाए। परन्तु फिर भी ये मूसा के अज़ाब की लड़ाइयों की तरह अपने अन्दर बहुत कठोरता नहीं रखता था। अपितु जो व्यक्ति इस्लाम स्वीकार

करने के साथ यदि वह अरबी है या जिज़िया के साथ यदि वह ग़ैर अरबी है तो शरण लेता था तो वह अज़ाब टल जाता था। और यह तरीका सर्वथा प्रकृति के नियम के अनुसार था। क्योंकि ख़ुदा तआला के अज़ाब दुनिया पर नो आपदाओं के रूप में उतरते हैं वे दान पुण्य, दुआ, तौब:, विनय और विनम्रता के साथ निस्सन्देह पतनशील हो जाते हैं। इसी कारण जब तीव्रता से आपदा की अग्नि भड़कती है तो स्वाभाविक तौर पर दुनिया की समस्त कौमें दुआ, तौब:, क्षमा-याचना, दान-पुण्य की ओर व्यस्त हो जाती हैं और ख़ुदा की ओर रुजू करने के लिए एक स्वाभाविक हरकत पैदा हो जाती है।

अत: इस से सिद्ध होता है कि अज़ाब के उतरने के समय मानवीय स्वभावों का ख़ुदा तआला की ओर रुजू करना एक स्वाभाविक बात है। तौब: और दुआ अज़ाब के समयों में मनुष्य के लिए लाभप्रद सिद्ध हुई है। अर्थात् तौब: और क्षमा-याचना से अज़ाब टल भी जाता है। जैसा कि यूनुस नबी की कौम का अज़ाब टल गया। ऐसा ही हज़रत मूसा की दुआ से कई बार बनी इस्राईल का अज़ाब टल गया। तो ख़ुदा तआला का इन काफ़िरों को जिन्होंने इस्लाम और मुसलमानों पर बहुत कठोरता की थी यहां तक की स्त्रियाँ और बच्चे भी क़त्ल किए जाते थे। तलवार के शिकंजे में गिरफ़्त करना और फिर उनका तौब: रुजू और सच की ओर आने से मुक्ति दे देना यह ख़ुदा की वही अनश्वर आदत है जिस का अवलोकन प्रत्येक युग में होता चला आया है।

अत: हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के समय में इस्लामी जिहाद की जड़ यही थी कि ख़ुदा का प्रकोप अत्याचार

करने वालों पर भड़का था। किन्तु किसी न्यायवान सरकार की न्याय की छाया के नीचे रह कर जैसा कि हमारी महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द की सरकार है। फिर इस के बारे में विद्रोह का इरादा रखना इसका नाम जिहाद नहीं है अपितु यह एक अत्यन्त वहशियों जैसा मूर्खतापूर्ण विचार है। जिस सरकार द्वारा आज़ादी से जीवन व्यतीत हो और पूर्ण रूप से अमन प्राप्त हो तथा धार्मिक कर्तव्य यथायोग्य अदा कर सकें उसके बारे में बुरी नीयत को कार्यान्वित करना एक आपराधिक कार्य है न कि जिहाद। इसलिए 1857 ई. में उत्पाद फैलाने वालों के कार्य को ख़ुदा ने पसन्द नहीं किया और अन्ततः वे भिन्न-भिन्न प्रकार के अज़ाबों में ग्रस्त हुए क्योंकि उन्होंने अपनी उपकारी और प्रतिपालक सरकार का मुक़ाबला किया। इसलिए ख़ुदा तआला ने मुझे इस सिद्धान्त पर स्थापित किया है कि उपकारी सरकार की जैसा कि यह बरतानवी सरकार है सच्चा आज्ञापालन किया जाए और सच्ची कृतज्ञता की जाए। अतः मैं और मेरी जमाअत इस सिद्धान्त के पाबन्द हैं। इसलिए मैंने इस मामले पर अमल कराने के लिए बहुत सी पुस्तकें अरबी, फ़ारसी और उर्दू में लिखीं और विस्तारपूर्वक लिखा कि ब्रिटिश इण्डिया के मुसलमान इस बर्तानवी सरकार के अधीन आराम से जीवन व्यतीत करते हैं और क्योंकर अपने धर्म का प्रचार करने पर समर्थ हैं और समस्त कर्तव्य जो मानवता के लिए आवश्यक हैं बिना रोक-टोक अदा करते हैं। फिर इस मुबारक और शान्तिदायक सरकार के बारे में जिहाद का कोई विचार दिल में लाना कितना अन्याय और विद्रोह है। ये पुस्तकें हज़ारों रुपए व्यय करके प्रकाशित कराई गईं और फिर इस्लामी देशों में प्रसारित की गईं। और मैं जानता हूं कि

निस्सन्देह हज़ारों मुसलमानों पर इन पुस्तकों का प्रभाव पड़ता है विशेष तौर पर वह जमाअत जो मेरे साथ बैअत का और मुरीद होने का संबंध रखती है। वह एक ऐसी सच्ची, निष्कपट और इस सरकार की (शुभ) चिन्तक बन गई है कि मैं दावे से कह सकता हूं कि इसका उदाहरण दूसरे मुसलमानों में नहीं पाया जाता। वह सरकार के लिए एक वफ़ादार फ़ौज हैं जिन का बाह्य एवं आन्तरिक बर्तानवी सरकार की शुभेच्छा से परिपूर्ण है।

मैंने अपनी लिखी हुई पुस्तकों में इस बात पर भी बल दिया है कि जो कुछ मूर्ख मौलवी तलवार के द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं वह बात सच्चे धर्म के लिए दूसरे रंग में बर्तानवी सरकार में प्राप्त है। अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण आज़ादी के साथ अपने धर्म को सिद्ध करना तथा दूसरे धर्म का खण्डन कर सकता है। और मेरी राय में मुसलमानों के लिए धार्मिक विचारों की अभिव्यक्ति में कानूनी सीमा तक विशाल अधिकार होने में बड़ा नीति भरा हित है। क्योंकि वह इस प्रकार से अपने मूल उद्देश्य को पाकर युद्ध की आदतों को जो ख़ुदा की किताब की कुधारणा से कुछ लोगों में पाई जाती हैं भुला देंगे। कारण यह कि जैसा कि एक नशे वाली चीज़ का इस्तेमाल करना दूसरी नशीली चीज़ से समाप्त कर देता है। ऐसा ही जब एक उद्देश्य एक पहलू से निकलता है तो दूसरा पहलू स्वयं सुस्त हो जाता है।

इन्हीं उद्देश्यों में से मैं अपना कर्तव्य समझता हूं कि धार्मिक शास्त्राथों के बारे में अंग्रेज़ी आज़ादी से फ़ायदा उठाऊँ तथा इस्लामी जोश के लोगों को इस वैध बात की ओर ध्यान देकर अवैध विचारों और जोशों से उनकी भावनाओं को रोक दूं। मुसलमान लोग एक

ख़ूनी मसीह के प्रतीक्षक थे और ये आस्थाएं इतनी ख़तरनाक हैं कि झूठ गढ़ने वाला झूठा महदी मौऊद का दावा करके एक दुनिया को खून में डुबो सकता है। क्योंकि मुसलमानों में अब तक यह विशेषता है कि जैसा कि वह एक जिहाद की प्रेरणा दिलाने वाले फ़क़ीर के साथ हो जाते हैं शायद वह ऐसी फर्माबरदारी एक बादशाह की भी नहीं कर सकते। इसलिए ख़ुदा ने चाहा कि ये ग़लत विचार दूर हों। अत: उसने मुझे मसीह मौऊद और महदी मा'हूद की उपाधि दे कर मुझ पर व्यक्त किया कि किसी ख़ूनी महदी या किसी ख़ूनी मसीह की प्रतीक्षा करना सर्वथा ग़लत विचार है। अपितु ख़ुदा इरादा फ़रमाता है कि आकाशीय निशानों के साथ सच को दुनिया में फैला दे। तो मेरा सिद्धान्त है कि दुनिया के बादशाहों को अपनी बादशाहियाँ मुबारक हों। हमें उसकी हुकूमत और दौलत से कुछ मतलब नहीं। हमारे लिए आकाशीय बादशाही है। हाँ नेक नीयत और सच्ची शुभेच्छा से बादशाहों को भी आकाशीय सन्देश पहुँचाना आवश्यक है। परन्तु इस बर्तानवी सरकार के बारे में न केवल इतना है अपितु चूंकि हम इस हुकूमत की दया रूपी छाया के नीचे अमन पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकते हैं। अत: इस सरकार के लिए हमारा यह भी कर्तव्य है कि इसकी दुनिया और आख़िरत के लिए दुआ भी करें।

अफ़सोस कि जिस समय से मैंने हिन्दुस्तान के मुसलमानों को यह ख़बर सुनाई है कि कोई ख़ूनी महदी या ख़ूनी मसीह दुनिया में आने वाला नहीं है अपितु एक व्यक्ति मैत्री के साथ आने वाला था जो मैं हूं। उस समय से यह मूर्ख मौलवी मुझ से द्वेष रखते हैं और मुझे काफ़िर और धर्म से बाहर ठहराते हैं। विचित्र बात है कि ये लोग

मानव जाति के खून बहाने से प्रसन्न होते हैं। परन्तु यह क़ुरआन की शिक्षा नहीं है और न सब मुसलमान इस विचार के हैं। यह पादरियों की भी बेईमानी है कि अकारण हमेशा के जिहाद के मामले का पवित्र क़ुरआनकी ओर सम्बद्ध करते हैं और इस प्रकार से कुछ नादानों को धोखे में डालकर नफ़्सानी जोशों की ओर उनको ध्यान दिलाते हैं। और मैं न अपने नफ्स से और न अपने विचार से अपितु ख़ुदा से मामूर हूं कि जिस सरकार की दया रूपी छाया के नीचे मैं अमन के साथ जीवन व्यतीत कर रहा हूं उसके लिए दुआ में व्यस्त हूं और उसके उपकारों का कृतज्ञ हूं और उसकी प्रसन्नता को अपनी प्रसन्नता समझूं। और जो कुछ मुझे कहा गया है नेक नीयत से उस तक पहुँचाऊँ। इसलिए इस जुबली के अवसर पर जनाब महामहिम महारानी के उन निरन्तर उपकारों को याद करके जो हमारी जान, माल और प्रतिष्ठा के साथ संलग्न हैं कृतज्ञता का उपहार प्रस्तुत करता हूं और वह उपहार महामहिम महारानी की सलामती और सौभाग्य के लिए दुआ है जो दिल से तथा अस्तित्व के कण-कण से निकलती है।

हे क़ैसरा-व-महामहिम महारानी! हमारे दिल तेरे लिए दुआ करते हुए ख़ुदा के आगे झुकते हैं और हमारी रूहें तेरे प्रताप और सलामती के लिए एक ख़ुदा के आगे सज्दा करती हैं। हे समृद्धशाली क़ैसरा हिन्द! इस जुबली के आयोजन पर हम अपने दिल और जान से तुझे मुबारकबाद देते हैं और ख़ुदा से चाहते हैं कि ख़ुदा तुझे उन नेकियों का बहुत-बहुत प्रतिफल दे जो तुझ से और तेरी बरकतों वाली सरकार से और तेरे अमन प्रिय अधिकारियों से हमें पहुंची हैं। हम तेरे अस्तित्व को इस देश के लिए ख़ुदा की एक बड़ी कृपा समझते हैं। और हम

उन शब्दों के न मिलने से शर्मिन्दा हैं जिन से हम इस कृतज्ञता को पूर्ण रूप से अदा कर सकते। प्रत्येक दुआ जो एक सच्चा कृतज्ञ तेरे लिए कर सकता है हमारी ओर से तेरे में स्वीकार हो। ख़ुदा तेरी आँखों की कामनाओं के साथ ठण्डा रखे। और तेरी आयु, स्वास्थ्य और सलामती में अधिकाधिक बरकत दे और तेरे प्रताप की उन्नतियों का सिलसिला जारी रखे और तेरी सन्तान और नस्ल को तेरी तरह प्रताप के दिन दिखा दे। और विजय एवं सफलता प्रदान करता रहे। हम उस कृपालु और दयालु ख़ुदा का बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं जिसने इस खुशियाँ प्रदान करने वाले दिन को हमें दिखाया तथा जिसने ऐसी (प्रजा) पालक, न्यायवान, समय के अनुसार काम करने वाली महारानी की छाया के अन्तर्गत हमें शरण दी और हमें उसके मुबारक शासन काल के नीचे यह अवसर दिया कि हम प्रत्येक भलाई को जो दुनिया और धर्म के संबंध में हो प्राप्त कर सकें और अपने नफ्स,अपनी क़ौम और अपनी मानव जाति के लिए सच्ची हमदर्दी की शर्तों को सम्पन्न कर सकें। और उन्नति के उन मार्गों पर चलने से न केवल हम संसार की अप्रिय बातों से सुरक्षित रह सकते हैं अपितु अनश्वर संसार के सौभाग्य भी हमें प्राप्त हो सकते हैं।

जब हम सोचते हैं कि ये समस्त नेकियाँ और उनके साधन जनाब क़ैसर हिन्द के शासन काल में हमें मिले हैं और यह सब ख़ैर और भलाई के दरवाज़े हम पर इसी महामहिम महारानी मुबारका के बादशाहत के दिनों में खुले हैं। तो इससे हमें इस बात पर दृढ़ तर्क मिलता है कि जनाब क़ैसरा हिन्द की नीयत प्रजा के पालन के लिए बहुत ही नेक है। क्योंकि यह एक मान्य मामला है कि बादशाह की

नीयत प्रजा की आन्तरिक परिस्थितियों और उनके शिष्टाचार तथा चाल-चलन पर बहुत प्रभाव रखती है। या यों भी कह सकते हैं कि जब किसी पृथ्वी के भाग पर नेक नीयत और न्यायवान बादशाह शासन करता है तो ख़ुदा तआला की यही आदत है कि उस पृथ्वी के रहने वाले अच्छी बातों और अच्छे शिष्टाचार की ओर ध्यान देते हैं और ख़ुदा और प्रजा के साथ उन में निष्कपटता की आदत पैदा हो जाती है। तो यह बात प्रत्येक आंख को स्पष्ट तौर पर दिखाई दे रही है कि ब्रिटिश इण्डिया अच्छी हालतों तथा अच्छे शिष्टाचार की ओर एक महान क्रान्ति पैदा हो रही है और वहशियों वाली भावनाएं फ़रिश्तों वाली हरकतों की ओर स्थानान्तरण कर रही हैं और नई नस्ल कपटाचार के स्थान पर निष्कपटता को अधिक पसन्द करती जाती है। इंसानों की बुद्धि और समझ तथा सोच में एक बड़ा परिवर्तन पैदा हो गया है और अधिकतर लोग एक सादा और बेलौस जीवन के लिए तैयार हो रहे हैं। मुझे मालूम होता है कि यह शासन काल एक ऐसे प्रकाश की भूमिका है जो आकाश से उतर कर दिलों को रोशन करने वाली है। हज़ारों दिल इस प्रकार से ईमानदारी के शौक में उछल रहे हैं कि जैसे वे एक आकाशीय मेहमान के लिए जो सच्चाई का प्रकाश है पेशवाई के तौर पर क़दम बढ़ाते हैं। मानवीय शक्तियों के समस्त पहलुओं में अच्छे इन्किलाब का रंग दिखाई देता है और दिलों की हालत उस उत्तम पृथ्वी की तरह हो रही है जो अपनी हरियाली निकालने के लिए फूल गई हो। हमारी आदरणीय महारानी यदि इस बात से गर्व करें तो उचित है कि रूहानी उन्नतियों के लिए ख़ुदा इसी युग से प्रारम्भ करना चाहता है जो ब्रिटिश इण्डिया की ज़मीन है।

इस देश में कुछ ऐसे रूहानी इन्किलाब के लक्षण दिखाई देते हैं कि ख़ुदा बहुतों को नीचे जीवन से बाहर निकालना चाहता है। अधिकतर लोग स्वाभाविक तौर पर पवित्र जीवन प्राप्त करने के लिए झुकते जाते हैं और बहुत सी रूहें उत्तम शिक्षा और उत्तम शिष्टाचार की तलाश में हैं और ख़ुदा की कृपा आशा दे रही है कि वे अपनी इन मनोकामनाओं को पाएँगे।

यद्यपि अधिकतर क़ौमें में अभी ऐसी कमज़ोर हैं कि सच्चाई की गवाही सफाई के साथ नहीं दे सकतीं अपितु सच्चाई को नहीं समझ सकतीं और उनके लेख तथा भाषणों में न्यूनाधिक पक्षपात की नक्काशी पाई जाती है। परन्तु देखा जाता है कि न्यायप्रिय मनुष्यों में सच पहचानने की शक्ति बढ़ गई है वह सच्चाई की चमक को बहुत से पर्दों में से भी देख लेते हैं। यह एक बड़ी क़द्र करने योग्य बात है कि अधिकतर लोग आध्यात्म ज्ञान के प्रकाश की तलाश में लग गए हैं। हाँ तलाश की धुन में ग़लतियों में पड़ भी रहे हैं और ग़ैर मा'बूद (उपास्य) को वास्तविक मा'बूद का स्थान भी देते हैं। परन्तु कुछ सन्देह नहीं कि एक गति पैदा हो गई है तथा बातों की वास्तविकता, असलियत, और जड़ तक पहुंचना और सतही विचारों तक रुके न रहना प्रशंसनीय आचरण समझा गया है जिस से भविष्य की आशाएं सुदृढ़ हो गई हैं। तो इसमें क्या सन्देह है कि यह भी समय के बादशाह का एक प्रतिबिम्ब है और कुछ सन्देह नहीं कि यह सरकार हिन्दुस्तान में दाख़िल होते ही एक रूहानी तत्परता और सच की तलाश का प्रभाव साथ लाई है तथा निस्सन्देह उस हमदर्दी का परिणाम मालूम होता है जो हमारी महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द के हृदय में ब्रिटिश

इण्डिया की प्रजा के बारे में केन्द्रित है।

यद्यपि मैं उन उपकारों की भी अत्यन्त क़द्र करता हूं जो भौतिक तौर पर जनाब आदरणीय महारानी के ध्यानों से हिन्द के मुसलमानों के हाल के साथ संलग्न हैं। परन्तु एक बड़ा भाग हज़रत क़ैसरा हिन्द की कृपाओं का यही है कि उनकी हुकूमत के दिनों में हिन्दुस्तान की बहुत सी वहशियाना हालतें सुधार की ओर आ गई हैं और प्रत्येक व्यक्ति ने रूहानी उन्नतियों का बड़ा अवसर पाया है। हम स्पष्ट देखते हैं कि जैसे युग एक सच्ची और पवित्र योग्यता के निकट आता जाता है और दिलों को सच्चाई को पहचानने की ओर ध्यान पैदा होता जाता है। धार्मिक मामलों में विचारों के आदान-प्रदान के कारण प्रत्येक सत्याभिलाशी को आगे क़दम रखने का साहस हो गया है। और वह सच्चा और अकेला खुला बहुतों की दृष्टि से गुप्त था अब अपनी चमकारें दिखाने के लिए स्पष्ट इरादा करता हुआ मालूम होता है। मेरे विचार में यह भी गुज़रता है कि इस से पहले इस देश की समृद्धि और धनाढ्यता उसकी रूहानी उन्नति की बहुत बड़ी बाधा थी। और प्रत्येक धन-दौलत रखने वाला अय्याशी और आराम प्रियता की ओर संतुलन से अधिक झुक गया था। यदि हिन्दुस्तान की वही स्थिति रहती तो आज शायद इस देश के रहने वाले वहशियों से भी अधिक निकृष्ट होते। यह अच्छा हुआ कि बर्तानवी सरकार के उत्तम उपाय के कारण इस देश के नेमतों और सुख की चाह के सामान कुछ कम किए गए ताकि लोग कलाओं और विद्याओं की ओर ध्यान दें। और रूहानी उन्नतियों का भी दरवाज़ा खुले और कामवासना संबंधी भावनाओं के सामान कम हो जाएँ। तो यह सब

कुछ महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द के मुबारक काल में प्रकटन में आया। मैं ख़ूब जानता हूं कि संकट और मुहताज होना भी इन्सान की इन्सानियत के लये एक कीमिया है। बशर्ते कि चरम सीमा तक न पहुँचे और थोड़े दिन हो। अतः हमारा देश इस कीमिया का भी मुहताज था। मेरा इसमें व्यक्तिगत अनुभव है कि हम ने इस कीमिया से बहुत लाभ उठाया है और हमें बहुत से रूहानी जवाहिरात इस माध्यम से मिले हैं। मैं पंजाब के एक ऐसे ख़ानदान में से हूं जो मुग़ल बादशाहों के काल में एक रियासत के रूप में चला आता था और ज़मींदारी के बहुत से देहात हमारे बुज़ुर्गों के पास थे और हुकूमत के अधिकार भी थे। फिर सिक्खों के उत्थान से कुछ पहले अर्थात् जबकि मुग़ल बादशाहों के देश के मामलों की व्यवस्था में बहुत सी कमज़ोरी आ गई थी और इस ओर गृह युद्ध की तरह स्वेच्छाचारी रियासतें पैदा हो गई थीं। मेरे पड़दादा साहिब गुल मुहम्मद भी राज्य में उथल-पुथल में से थे और अपनी रियासत में हर प्रकार से अधिकारी रईस थे, फिर जब सिक्खों का प्रभुत्व हुआ तो केवल अस्सी गांव उनके हाथ में रह गए और बहुत शीघ्र अस्सी की संख्या का शून्य भी उड़ गया और फिर शायद आठ या सात गांव शेष रहे। धीरे-धीरे अंग्रेज़ी सरकार के समय में तो बिल्कुल खाली हाथ हो गए। अतः इस हुकूमत के प्रारंभिक काल में केवल पांच गांव के मालिक कहलाते थे और मेरे पिता मिर्ज़ा ग़ुलाम मुर्तज़ा साहिब गवर्नरी दरबार में कुर्सी नशीन भी थे और अंग्रेज़ी सरकार के ऐसे शुभचिंतक और दिल के बहादुर थे कि 1857 ई. के उपद्रव में पचास जवान सैनिक उपलब्ध करके अपनी हैसियत से बढ़कर उच्चतम सरकार को सहायता दी थी। फिर हमारी

रियासत के दिन प्रतिदिन पतनशील होते गए। यहां तक कि हमारी अन्तिम नौबत यह थी कि एक कम दर्जे के ज़मींदार की तरह हमारे ख़ानदान की हैसियत हो गई। प्रत्यक्ष में यह बात बहुत गम दिलाने वाली थी कि प्रथम हम क्या थे और फिर क्या हो गए। परन्तु जब मैं सोचता हूं तो यह हालत अत्यन्त धन्यवाद योग्य मालूम होती है कि ख़ुदा ने हमें बहुत सी उन विपत्तियों से बचा लिया जो दौलतमंदी के अनिवार्य परिणाम हैं। जिनको हम इस समय इस देश में अपनी आँखों से देख रहे हैं। परन्तु मैं इस देश के अमीरों और रईसों के दृष्टांत प्रस्तुत करना नहीं चाहता जो मेरी राय का समर्थन करते हैं और मैं उचित नहीं देखता कि इस देश के सुस्त और आलसी तथा आराम प्रिय और दीन-दुनिया से लापरवाह और भोग-विलास में डूबे हुए अमीरों और धनाढ्यों के नमूने अपने दावे के समर्थन में प्रस्तुत करना क्योंकि मैं नहीं चाहता कि किसी के दिल को दु:ख दूं। यहां मेरा मतलब केवल इतना है कि यदि हमारे बुज़ुर्गों की रियासत में विकार न आता तो शायद हम भी ऐसे ही हज़ारों प्रकार की लापरवाहियों, अंधकारों और कामवासना सबंधी भावनाओं में डूबे होते। अत: हमारे लिए अल्लाह तआला ने उच्चतम बर्तानवी हुकूमत में इस तुच्छ संसार की लाखों ज़ंजीरों और उसके फ़ानी (नश्वर) संबंधों से निवृत्त होकर बैठ गए और ख़ुदा ने हमें उन समस्त परीक्षाओं और आज़मायशों से बचा लिया कि जो दौलत, हुकूमत, रियासत और अमारत की हालत में सामने आतीं, और रूहानी हालतों का सत्यानाश करतीं। यह ख़ुदा की कृपा है कि उसने हमें इन गर्दिशों और भिन्न-भिन्न प्रकार की घटनाओं में जो हुकूमत के बाद ज़ोर दिखाने के युग से अनिवार्य

पड़ी हुई हैं बर्बाद करना नहीं चाहा। अपितु ज़मीन की तुच्छ हुकूमतों और रियासतों से हमें मुक्ति देकर आकाश की बादशाहत प्रदान की। जहां न कोई दुश्मन चढ़ाई कर सके और न प्रतिदिन इसमें युद्धों और रक्तपात के ख़तरे हों और न ईर्ष्यालुओं और न कृपणों का योजना बनाने का अवसर मिले। चूंकि उसने मुझे यसू मसीह के रंग में पैदा किया था और भावसाम्य प्रकृति की दृष्टि से यसू की रूह मेरे अन्दर रखी थी। इसलिए अवश्य था कि खोई हुई रियासत में भी मुझे यसू मसीह के साथ समानता होती। तो रियासत का कारोबार तबाह होने से यह समानता भी निश्चित हो गई जिसको ख़ुदा ने पूरा किया। क्योंकि यसू के हाथ में दाऊद बादशाह ख़ुदा के नबी के कब्ज़े वाले देशों में से जिनकी सन्तान में यसू था, एक गांव भी शेष न रहा था केवल नाम की शहज़ादगी शेष रह गई थी।

यद्यपि मैं इतनी तो अतिशयोक्ति नहीं कर सकता कि मुझे सर रखने का स्थान नहीं। परन्तु मैं धन्यवाद करता हूं कि ख़ुदा तआला ने इन समस्त व्यथाओं और कठिनाइयों के बाद जिन का यहां वर्णन करना बे मौक़ा है। मुझे इस प्रकार से अपनी मेहरबानी की गोद में ले लिया, जैसा कि उसने उस मुबारक इन्सान को लिया था जिस का नाम इब्राहीम था। उसने मेरे दिल को अपनी ओर खींच लिया और वे बातें मुझ पर खोलीं जो किसी पर नहीं खुल सकतीं जब तक उस पवित्र गिरोह में सम्मिलित न किया जाए, जिसको दुनिया नहीं पहचानती। क्योंकि वह दुनिया से बहुत दूर और दुनिया उन से दूर है। उसने मुझ पर प्रकट कर दिया कि वह अकेला अपरिवर्तनीय, सामर्थ्यवान, और असीमित ख़ुदा है जिसके समान और कोई नहीं। और उसने मुझे अपने

वार्तालाप का सम्मान प्रदान किया और उसने बिना माध्यम अपने मार्ग की मुझे शिक्षा दी है, तथा युग के गुज़रने से जो क़ौमों की आस्था में ग़लतियां आ गईं उन सब पर मुझे अवगत किया है।

उसने मुझे इस बात पर सूचित किया है कि वास्तव में यसू मसीह ख़ुदा के बहुत ही प्रिय और नेक बन्दों में से है और उन में से है जो ख़ुदा के चुने हुए लोग हैं तथा उन में से है जिनको ख़ुदा अपने हाथ से साफ़ करता और अपने प्रकाश की छाया के नीचे रखता है। परन्तु जैसा कि गुमान किया गया है ख़ुदा नहीं है। हाँ ख़ुदा से मिलने वाला है और उन कामिलों में से है जो थोड़े हैं।

और ख़ुदा की विचित्र बातों में से जो मुझे मिली हैं एक यह भी है जो मैंने बिल्कुल जागने की अवस्था में जो कश्फ़ी जागना कहलाता है यसू मसीह से कई बार मुलाक़ात की है और उससे बातें करके उसके असल दावे और शिक्षा का हाल मालूम किया है। यह एक बड़ी बात है जो ध्यान देने योग्य है कि हज़रत यसू मसीह उन कुछ आस्थाओं में से जो कफ्फारः, तस्लीस और इबनियत (बेटा होना) है ऐसे नफ़रत करने वाले पाए जाते हैं कि जैसे एक भारी इफ्तिरा (गढ़ा गया झूठ) जो उन पर किया गया है वह यही है। यह कश्फ़ की गवाही है तर्कहीन नहीं है अपितु मैं विश्वास रखता हूं कि यदि कोई सत्याभिलाषी नीयत की सफ़ाई से एक समय तक मेरे पास रहे और वह हज़रत मसीह को कश्फ़ी हालत में देखना चाहे तो मेरे ध्यान और दुआ की बरकत से वह उनको देख सकता है, उन से बातें भी कर सकता है और उस के बारें में उन से गवाही भी ले सकता है। क्योंकि मैं वह व्यक्ति हूँ जिसकी रूह में बुरूज

के तौर पर यसू मसीह की रूह निवास करती है। यह एक ऐसा उपहार है जो महामहिम महारानी क़ैसरा इंगलिस्तान-व-हिन्द की सेवा में प्रस्तुत करने योग्य है।

दुनिया के लोग इस बात को नहीं समझेंगे, क्योंकि वे आकाशीय रहस्यों पर कम ईमान रखते हैं -परन्तु अनुभव करने वाले इस सच्चाई को अवश्य पाएँगे।

मेरी सच्चाई पर और भी आकाशीय निशान हैं जो मुझ से प्रकट हो रहे हैं और इस देश के लोग उनको देख रहे हैं। अब मैं इस मनोकामना में हूं कि मुझे जो विश्वास प्रदान किया गया है वह दूसरों के दिलों में क्योंकर उतारा जाए। मेरा शौक मुझे बेचैन कर रहा है कि मैं उन आकाशीय निशानों की महामहिम क़ैसरा हिन्द को सूचना दूं। मैं हज़रत यसू मसीह की ओर से एक सच्चे सफ़ीर (दूत) की हैसियत में खड़ा हूं। मैं जानता हूं कि जो कुछ आजकल ईसाइयत के बारे में सिखाया जाता है यह हज़रत यसू मसीह की वास्तविक शिक्षा नहीं है। मुझे विश्वास है कि यदि हज़रत मसीह दुनिया में फिर आते तो वह इस शिक्षा को पहचान भी नहीं सकते।

एक और बड़ा भारी संकट उल्लेखनीय है वह यह है कि उस ख़ुदा के सदैव के प्रिय और सदैव के प्रेमी तथा सदैव के मान्य के बारे में जिन का नाम यसू है यहूदियों ने तो अपनी शरारत और बेईमानी से लानत के बुरे से बुरे अर्थ को वैध रखा परन्तु ईसाइयों ने भी इस आरोप में किसी सीमा तक भागीदारी ग्रहण की। क्योंकि यह गुमान किया गया है कि जैसे यसू मसीह का दिन तीन दिन तक लानत के अर्थ का चरितार्थ भी रहा है। इस बात के विचार से हमारा

शरीर काँपता है और अस्तित्व के कण-कण पर कम्पन पड़ जाता है। क्या मसीह का पवित्र हृदय और ख़ुदा की लानत!!! यद्यपि एक सेकण्ड के लिए ही हो। अफ़सोस हज़ार अफ़सोस कि यसू मसीह जैसे ख़ुदा के प्रिय के बारे में यह विश्वास रखें कि किसी समय उस का दिल लानत के अर्थ का चरितार्थ भी हो गया था।

इस समय हम विनयपूर्वक निवेदन किसी धार्मिक हैसियत से नहीं अपितु एक कामिल इन्सान के सम्मान की सुरक्षा के लिए प्रस्तुत करते हैं और यसू की ओर से रसूल के समान होकर जिस प्रकार कश्फ़ी अवस्था में उसकी जीभ से सुना। हुज़ूर क़ैसरा हिन्द में पहुँचा देते हैं और आशा रखते हैं कि महामहिम महारानी इस ग़लती का सुधार करें। यह इस युग की एक बहुत बड़ी ग़लती है कि अब लोगों ने लानत के अर्थ पर विचार नहीं किया था परन्तु अब आदर चाहता है कि अति शीघ्र इस ग़लती का सुधार किया जाए और ख़ुदा के उस उच्च श्रेणी के प्रिय और चुने हुए का सम्मान बचाया जाए। क्योंकि अरबी और इब्रानी भाषा में लानत का शब्द ख़ुदा से दूर और अवज्ञाकारी के लिए आता है। और किसी व्यक्ति को उस समय लईन कहा जाता है कि जब वह ख़ुदा से बिल्कुल उद्दण्ड और बेईमान हो जाए और ख़ुदा उसका दुश्मन और वह ख़ुदा का दुश्मन हो जाए। इसी लिए शब्दकोश की दृष्टि से लईन शैतान का नाम है अर्थात ख़ुदा से उद्दण्ड और अवज्ञाकारी। तो यह क्योंकर संभव है कि ख़ुदा के ऐसे प्रिय के बारे में एक सेकण्ड के लिए भी कह सकें कि नऊज़ुबिल्लाह किसी समय उसका दिल वास्तव में ख़ुदा से उद्दण्ड, अवज्ञाकारी और दुश्मन हो गया था? कितना

अनुचित होगा कि हम अपनी मुक्ति की एक काल्पनिक योजना क़ायम करने के लिए ख़ुदा के ऐसे प्रिय पर अवज्ञा का दाग़ लगा दें और यह विश्वास रखें कि किसी समय वह ख़ुदा से बाग़ी और उद्दण्ड भी हो गया था। इससे अच्छा है कि मनुष्य अपने लिए नर्क स्वीकार करे। यदि ऐसे चुने हुए का पवित्र सम्मान और नि:स्वार्थ जीवन का शत्रु न बने।

ईसाइयों का जितना हज़रत यसू मसीह से प्रेम करने का दावा है वही दावा मुसलमानों को भी है। जैसे आंजनाब का अस्तित्व ईसाइयों और मुसलमानों में एक साझी संपत्ति की तरह है और मुझे सर्वाधिक अधिकार है। क्योंकि मेरी तबियत यसू में डूबी हुई है और यसू की मुझ में। इसी दावे के समर्थन में आकाशीय निशान प्रकट हो रहे हैं और प्रत्येक को बुलाया गया है कि यदि चाहे तो निशानों के द्वारा इस दावे में अपनी तसल्ली करे। इस स्थान पर मैंने इतना लिखने का साहस इसलिए किया है कि हज़रत यसू मसीह का सच्चा प्रेम और सच्ची महानता जो मेरे दिल में है तथा वे बातें जो मैंने यसू मसीह की जीभ से सुनीं और वह सन्देश जो उसने मुझे दिया। इन समस्त बातों ने मुझे तहरीक की कि मैं महामहिम महारानी के हुज़ूर में यसू की ओर से दूत होकर सादर निवेदन करूं कि जिस प्रकार ख़ुदा तआला की ओर से जनाब महारानी करोड़ों लोगों के प्राण एवं माल प्रतिष्ठा की संरक्षक ठहराई गई हैं, अपितु पशुओं और परिंदों के आराम के लिए भी हज़रत महारानी ने कानून जारी किए हैं। क्या खूब हो कि हज़रत महारानी को इस छुपे हुए अपमान पर भी दृष्टि डालने के लिए ध्यान पैदा हो जो यसू मसीह की प्रतिष्ठा

में किया जाता है। क्या ख़ूब हो कि जनाब महारानी दुनिया के समस्त शब्दकोशों की दृष्टि से सामान्यत: तथा अरबी और इब्रानी की दृष्टि से विशेषत: शब्द लानत के अर्थ की छान-बीन करें और शब्दकोशों के समस्त विद्वानों की इस बात के लिए गवाहियां लें कि क्या यह सच नहीं कि मलऊन किसी को केवल इस हालत में कहा जाएगा जबकि उसका दिल ख़ुदा की मारिफ़त, प्रेम और सानिध्य से दूर पड़ गया हो। और जब कि प्रेम की बजाए उसके दिल में ख़ुदा की शत्रुता पैदा हो गई हो। इसी कारण से अरब शब्दकोश में लईन शैतान का नाम है। तो किस प्रकार यह अपवित्र नाम जो शैतान के हिस्से में आ गया एक पवित्र हृदय की ओर सम्बद्ध किया जाए। मेरे कश्फ़ में मसीह ने अपना बरी होना इससे व्यक्त किया है और बुद्धि भी यही चाहती है कि मसीह की शान इस से श्रेष्ठतर है। शब्दकोश का अर्थ हमेशा हृदय से सम्बन्ध रखता है। और यह अत्यन्त स्पष्ट बात है कि हम ख़ुदा के सानिध्य प्राप्त और प्रिय को किसी तावील से मलऊन और लानती का नाम दे सकते। यह यसू मसीह का सन्देश है जो मैं पहचानता हूं। इस में मेरे सच्चे होने की यही निशानी है कि

★**हाशिया :-**यदि महामहिम महारानी मेरे दावे के सत्यापन के लिए मुझ से निशान देखना चाहें तो मैं विश्वास रखता हूं कि अभी एक वर्ष पूरा न होगा कि वह प्रकट हो जाएगा और न केवल यही अपितु दुआ कर सकता हूं कि यह सम्पूर्ण युग कुशलता और स्वास्थ्य से व्यतीत हो। परन्तु यदि कोई निशान प्रकट न हो और मैं झूठा निकलूँ तो मैं उस दण्ड पर राज़ी हूं कि महामहिम महारानी की राजधानी में फांसी दिया जाऊँ। यह सब विनय इसलिए है कि काश हमारी महामहिम महारानी को उस आकाश के ख़ुदा की ओर ध्यान आ जाए जिससे इस युग में ईसाई धर्म बेख़बर है। इसी से।

मुझ से वे निशान प्रकट होते हैं जो मानवीय शक्तियों से श्रेष्ठतर हैं। यदि महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द-व-इंगलिस्तान ध्यान दें तो मेरा ख़ुदा शक्तिमान है कि उनकी तसल्ली के लिए भी कोई निशान दिखाए जो खुशखबरी और ख़ुशी का निशान हो। बशर्ते कि निशान देखने के पश्चात मेरे सन्देश को स्वीकार कर लें और मेरा दूत होना जो यसू मसीह की ओर से है उसके अनुसार देश में पालन कराया जाए परन्तु निशान ख़ुदा के इरादे के अनुसार होगा न कि इन्सान के इरादे के अनुसार। हाँ विलक्षण होगा और अपने अन्दर ख़ुदा की श्रेष्ठता रखता होगा★।

महामहिम महारानी अपनी रोशन बुद्धि के साथ सोचें कि किसी का ख़ुदा से उद्दण्ड और ख़ुदा का दुश्मन नाम रखना जो शब्दकोश का अर्थ है। क्या इस से बढ़कर दुनिया में कोई और भी अनादर होगा? अत: जिसको ख़ुदा के समस्त फ़रिश्ते मुकर्रब, (सानिध्य प्राप्त) कर रहे हैं और जो ख़ुदा के प्रकाश से निकला है यदि उसका नाम ख़ुदा से उद्दण्ड तथा ख़ुदा का दुश्मन रखा जाए तो उसका कितना अपमान है? अफ़सोस इस अपमान को यसू के बारे में इस युग में चालीस करोड़ इन्सानों ने अपना रखा है। हे महामहिम महारानी यसू मसीह से तो यह नेकी कर ख़ुदा तुझ से बहुत नेकी करेगा। मैं दुआ मांगता हूं कि इस कार्रवाई के लिए ख़ुदा तआला स्वयं हमारी उपकारी महारानी के हृदय में इल्क़ा करे। पैलातूस ने जिसके युग में यसू था अन्याय से यहूदियों के रोब के नीचे आकर एक अपराधी कैदी को छोड़ दिया और यसू जो निर्दोष था उसे न छोड़ा। परन्तु हे महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द हम विनयपूर्वक एवं आदर के साथ तेरे हुज़ूर

में खड़े होकर निवेदन करते हैं कि तू इस प्रसन्नता के समय में जो साठ साला जुबली का समय यसू के छोड़ने के लिए प्रयास कर। इस समय हम अपनी अत्यन्त पवित्र नीयत से जो ख़ुदा के भय और सच्चाई से भरी हुई है तेरे समक्ष इस निवेदन के लिए साहस करते हैं कि यसू मसीह के सम्मान को उस दाग़ से जो उस पर लगाया जाता है अपनी मर्दाना हिम्मत से पवित्र करके दिखा। निस्सन्देह शहंशाहों के सामने उनकी अनुमति से पूर्व बात करना अपनी जान से बाज़ी होती है। परन्तु इस समय हम यसू मसीह के सम्मान के लिए प्रत्येक ख़तरे को स्वीकार करते हैं और केवल उसकी ओर से रिसालत लेकर एक राजदूत की हैसियत से अपने न्यायवान बादशाह के समक्ष खड़े हो गए हैं। हे हमारी महामहिम महारानी! तुझ पर असंख्य बरकतें उतरें। ख़ुदा तेऋ वे समस्त चिन्ताएं दूर करे जो तेरे हृदय में हैं। जिस प्रकार हो सके इस सफ़ारत को स्वीकार कर। समस्त धार्मिक मुक़द्दमों में यही एक कानून सदैव से चला आया है कि जब किसी बात में जो सदस्य विवाद करते हैं तो सर्वप्रथम पुस्तकों द्वारा अपने झगडे का फैसला करना चाहते हैं और जब पुस्तकों से वह फैसला नहीं हो सकता तो न्याय शास्त्रों की ओर ध्यान करते हैं और बौद्धिक तर्कों से फैसला करना चाहते हैं। और जब कोई मुक़द्दमा बौद्धिक तर्कों से भी तय होने में नहीं आता तो आकाशीय फैसले से इच्छुक होते हैं और आकाशीय निशानों को अपना हकम (निर्णायक) ठहराते हैं। परन्तु हे मख्दूमा महामहिम महारानी यसू मसीह की बरीयत के बारे में तीनों माध्यम गवाही देते हैं। पुस्तकीय माध्यम से इस प्रकार कि समस्त लेखपत्रों से पाया जाता है कि यसू हृदय का ग़रीब और सहनशील

तथा ख़ुदा से प्रेम करने वाला और हर दम ख़ुदा के साथ था। फिर क्योंकर कहा जाए कि नऊज़ुबिल्लाह उसका हृदय किसी समय ख़ुदा से उद्दण्ड ख़ुदा का इन्कारी और ख़ुदा का दुश्मन हो गया था। जैसा कि शब्दकोशों का अर्थ बताता है तथा बुद्धि से इस प्रकार से कि बुद्धि कदापि विश्वास नहीं करती कि जो ख़ुदा का नबी और ख़ुदा का एक मात्र और उसके प्रेम से भरा हुआ हो तथा जिसकी प्रकृति का ख़मीर प्रकाश से उठा हुआ हो उसमें नऊज़ुबिल्लाह बेईमानी और अवज्ञा का अन्धकार आ जाए। अर्थात् वही अँधकार जिसे दूसरे शब्दों में लानत कहते हैं और आकाशीय निशानों की दृष्टि से इस प्रकार कि ख़ुदा अब आकाशीय निशानों के माध्यम से ख़बर दे रहा है कि मसीह के बारे में जो क़ुरआन ने वर्णन किया कि वह लानत से सुरक्षित रहा और एक सेकण्ड के लिए भी उसका हृदय लानती नहीं हुआ। यही सत्य है वे निशान इस ख़ाकसार के द्वारा प्रकट हो रहे हैं और वर्षा के समान बरसते हैं। अत: हे हमारी विश्व की शरण महारानी ख़ुदा तुझे असंख्य कृपाओं से आबाद करे। इस मुक़द्दमे का अपनी पुरानी न्यायपूर्ण आदत के साथ फैसला कर।

मैं आदरपूर्वक एक और निवेदन के लिए भी साहस करता हूं कि इतिहास से सिद्ध है कि जब रूम के क़ैसरों में से जब तीसरा क़ैसर रूम सिंहासन पर आसीन हुआ और उसकी प्रतिष्ठा चरमोत्कर्ष को पहुँच गई तो उसे इस बात की ओर ध्यान पैदा हुआ कि वह प्रसिद्ध समुदाय ईसाइयों में जो एक एकेश्वरवादी तथा दूसरा हज़रत मसीह को ख़ुदा जानता था परस्पर बहस करा दे। अत: वह बहस क़ैसरे रूम दरबार में बड़ी खूबी और प्रबंध पूर्वक हुई। और बहस के सुनने

के लिए प्रतिष्ठित दर्शकगण और शासन के कार्यकर्ताओं को उनके पद और स्थान की दृष्टि से सैकड़ों कुर्सियां बिछाई गईं और दोनों पक्षों के पादरियों को चालीस दिन तक बादशाह के समक्ष बहस होती रही तथा क़ैसरे रूम दोनों पक्षों के तर्कों को भली भांति सुनता रहा और उन पर विचार करता रहा। अन्त में जो एकेश्वरवादी फ़िर्का था और हज़रत यसू मसीह को केवल ख़ुदा का रसूल और नबी जानता था वह विजयी हो गया और दूसरे फ़िर्के को ऐसी पराजय हुई कि उसी मज्लिस में क़ैसरे रूम ने व्यक्त कर दिया कि मैं न अपनी ओर से अपितु तर्कों के ज़ोर से एकेश्वरवादी फ़िर्के की ओर खींचा गया तथा इस से पूर्व कि उस मज्लिस से उठे तौहीद (एकेश्वरवाद) का मत ग्रहण कर लिया और उन एकेश्वरवादी ईसाइयों में से हो गया जिनका वर्णन पवित्र क़ुरआन में भी है और बेटा तथा ख़ुदा कहने से पृथक हो गया और फिर तीसरे क़ैसर तक प्रत्येक सिंहासन का उत्तराधिकारी एकेश्वरवादी (एक ख़ुदा को मानने वाला) होता रहा। इस से पता लगता है कि ऐसे धार्मिक जल्से पहले ईसाई बादशाहों का दस्तूर था और उनसे बड़े-बड़े परिवर्तन होते थे। इन घटनाओं पर दृष्टि डालने से बहुत ही इच्छापूर्वक दिल चाहता है कि हमारी क़ैसरा हिन्द (उसकी प्रतिष्ठा हमेशा रहे) भी क़ैसरे रूम की तरह ऐसा धार्मिक जल्सा राजधानी में आयोजित कराए कि यह रूहानी तौर पर एक यादगार होगी। परन्तु यह जल्सा क़ैसरे रूम की अपेक्षा अधिक विशालतापूर्वक होना चाहिए। क्योंकि हमारी महामहिम महारानी भी उस क़ैसर की अपेक्षा अधिक प्रताप रखती हैं। इस निवेदन का एक का यह भी कारण है कि जब से इस देश के लोगों ने अमरीका के

धर्मों के जल्से से सूचना पाई है स्वाभाविक तौर पर हृदयों में यह जोश पैदा हो गया है कि हमारी महामहिम महारानी भी विशेष तौर पर लन्दन में ऐसा जलसा आयोजित करें ताकि इस आयोजन से इस देश की शुभ चिन्तक प्रजा उनके रईसों और विद्वानों के गिरोह विशेष तौर पर राजधानी लन्दन में आप से मुलाक़ात का सम्मान प्राप्त कर सकें। और इस आयोजन से महामहिम महारानी की भी अपने ब्रिटिश इण्डिया की वफ़ादार प्रजा के हज़ारों चेहरों पर एक बार नज़र पड़ सके तथा कुछ सप्ताह तक लन्दन के कूचों और गलियों में हिन्दुस्तान के प्रतिष्ठित निवासी सैर करते हुए दिखाई दें। यहां यह आवश्यक होगा कि इस धर्मों के जल्से में प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म की ख़ूबियां वर्णन करे दूसरों से कुछ संबंध न रखे। यदि ऐसा हुआ तो यह जल्सा भी हमारी महामहिम महारानी की ओर से हमेशा के लिए एक रूहानी यादगार होगा और इंग्लैण्ड जिसके कानों तक बड़ी बेईमानी के साथ इस्लामी घटनाएं पहुंचाई गई हैं एक सच्चे नक्शे पर सूचना पा जाएगा, अपितु इंग्लेण्ड के लोग प्रत्येक धर्म की सच्ची फ़िलासफ़ी से अवगत हो जाएंगे। यह बात भरोसा करने योग्य नहीं है कि पादरियों के द्वारा हिन्दुस्तान के धर्मों की वास्तविकता इंग्लेण्ड को पहुंचती रहती है। क्योंकि पादरियों की पुस्तकें जिनमें वे दूसरे धर्मों की चर्चा करते हैं उस गन्दी नाली की तरह हैं जिसका पानी बहुत से मैल-कुचैल और कूड़ा कर्कट रखता है। पादरी लोग सच्चाई की वास्तविकता को खोलना नहीं चाहते अपितु छुपाना चाहते हैं। और उनके निबंधों में पक्षपात की ऐसी अत्युक्ति है जिसके कारण इंग्लेण्ड तक धर्मों की वास्तविक सच्चाई पहुंचाना कठिन अपितु असंभव है। यदि उनमें नेक नीयत होती

तो वे क़ुरआन पर ऐसे ऐतराज़ न करते जो मूसा की तौरात पर भी हो सकते हैं। यदि उनको ख़ुदा का भय होता तो वे उन किताबों को ऐतराज़ के समय उन से ग्रहण किया हुआ न ठहराते जो मुसलमानों के नज़दीक अमान्य और निश्चित सच्चाइयों से खाली हैं। इसलिए इन्साफ यही आदेश देता है कि यदि समस्त यूरोप फ़रिश्ता चरित्र भी हो परन्तु पादरी इसका अपवाद हैं। यूरोप के ईसाई जो इस्लाम को नफ़रत और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं उसका यही कारण है कि हमेशा से यही पादरी लोग घटना के विरुद्ध क़िस्सों को प्रस्तुत करके अनुसंधान का पाठ उनको देते आए हैं। हाँ मैं स्वीकार करता हूं कि कुछ मूर्ख मुसलमानों का चाल-चलन अच्छा नहीं और उनमें मूर्खता की आदतें विद्यमान हैं। जैसा कि कुछ वहशी मुसलमान अत्याचारपूर्ण रक्तपात का नाम जिहाद रखते हैं और उन्हें ख़बर नहीं कि प्रजा का न्याय्वान बादशाह के साथ मुकाबला करना इसका नाम बग़ावत है न कि जिहाद। और अहद तोड़ना और नेकी के स्थान पर बदी करना और निर्दोषों को मारना इस कृत्य का करने वाला अत्याचारी कहलाता है न कि ग़ाज़ी।

अतः यह विचार पादरियों की कुधारणा से पैदा हुए हैं। ख़ुदा की किताब में इसका निशान नहीं। ख़ुदा का कलाम अत्याचार पूर्ण तलवार उठाने वालों के लिए तलवार का दण्ड वर्णन करता है न कि अमन स्थापित करने वालों प्रजापालक और प्रत्येक कौम को आज़ादी के अधिकार देने वालों की अपेक्षा उद्दण्डता की शिक्षा देता है। ख़ुदा के कलाम को बदनाम करना यह बेईमानी है। इसलिए लोगों की भलाई के लिए यह बात अत्यन्त समय और आस्था के अनुकूल हित में

है कि जनाब क़ैसरा हिन्द की ओर से धर्मों की असलियत प्रकाशित करने के लिए धर्मों का जल्सा हो।

यह भी निवेदन करने के योग्य है कि इस्लामी शिक्षा की दृष्टि से इस्लाम धर्म के हिस्से केवल दो हैं। या यों कह सकते हैं कि यह शिक्षा दो बड़े उद्देश्यों पर आधारित है। प्रथम एक ख़ुदा को जानना। जैसा कि वह वास्तव में मौजूद हैं और उससे प्रेम करना तथा उसके सच्चे आज्ञापालन में अपने अस्तित्व को लगाना। जैसा कि आज्ञापालन और प्रेम की शर्त है। दूसरा उद्देश्य यह है कि उसके बन्दों की सेवा और हमदर्दी में अपनी समस्त शक्तियों को व्यय करना और बादशाह से लेकर तुच्छ इन्सान तक जो उपकार करने वाला हो। कृतज्ञता और उपकार के साथ बदला देना। इसलिए एक सच्चा मुसलमान जो अपने धर्म के बारे में वास्तव में ख़बर रखता हो। इस सरकार के बारे में जिसकी दया की छाया के नीचे अमन के साथ जीवन व्यतीत करता है। हमेशा निष्कपटता और आज्ञापालन का ध्यान रखता है और धर्म का मतभेद उसे सच्चे आज्ञापालन और फर्माबरदारी से नहीं रोकता। परन्तु पादरियों ने इस स्थान में भी बहुत धोखा खाया है और ऐसा समझ लिया है कि जैसे इस्लाम एक ऐसा धर्म है जिसका पालन करने वाला दूसरी क़ौमों का अशुभ चिन्तक और बुरा चाहने वाला। अपितु उनके खून का प्यासा होता है। हाँ यह स्वीकार कर सकते हैं कि कुछ मुसलमानों की क्रियात्मक हालतें अच्छी नहीं हैं। और जैसा कि प्रत्येक धर्म के कुछ लोग ग़लत विचारों में ग्रस्त होकर बुरी हरकतों को कर बैठते हैं। इसी गुण के कुछ मुसलमान भी पाए जाते हैं। परन्तु जैसा कि मैंने अभी वर्णन किया है यह ख़ुदा की शिक्षा का दोष नहीं है अपितु

उन लोगों की समझ का दोष है जो ख़ुदा के कलाम में विचार नहीं करते और अपने नफ़्स की भावनाओं के अधीन रहते हैं। विशेष तौर पर जिहाद का मामला जो बड़ी संवेदनशील शर्तों से सम्बद्ध था। कुछ मूर्खों और कम बुद्धि वालों ने ऐसा उल्टा समझ लिया है कि इस्लामी शिक्षा से बहुत ही दूर जा पड़े हैं। इस्लाम हमें यह कदापि नहीं सिखाता कि हम एक ग़ैर कौम और ग़ैर धर्म वाले बादशाह की प्रजा होकर उसकी छाया के नीचे प्रत्येक दुश्मन से अमन में रहकर फिर उसी के बारे में अशुभचिंता और बग़ावत का विचार दिल में लाएं। अपितु वह हमें यह शिक्षा देता है कि यदि तुम इस बादशाह का धन्यवाद न करो जिसकी छाया के नीचे तुम अमन में रहते हो तो फिर तुम ने ख़ुदा का धन्यवाद भी नहीं किया। इस्लाम की शिक्षा अत्यन्त हिकमत से भरपूर शिक्षा है और वह उसी नेकी को वास्तविक नेकी ठहराता है जो अपने अवसर पर चरितार्थ हो। वह केवल दया को पसन्द नहीं करता जब तक इन्साफ उसके साथ न हो। और केवल इन्साफ को पसन्द नहीं करता जब तक उसकी आवश्यकता परिणाम दया न हो। इस में कुछ सन्देह नहीं कि क़ुरआन ने इन बारीक पहलुओं का ध्यान रखा है जो इंजील ने नहीं किया। इंजील की शिक्षा है कि एक गाल पर तमांचा खाकर दूसरा भी फेर दिया जाए। परन्तु क़ुरआनकहता है कि-

وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا فَمَنْ عَفَا وَأَصْلَحَ فَأَجْرُهُ عَلَى اللّٰهِ

(सुरत अश्शूरा-41)

अर्थात् इन्साफ का सिद्धांत यही है कि जिसको दुःख पहुँचाया गया है वह उतना ही दुःख पहुंचाने का अधिकार रखता है। परन्तु यदि कोई माफ़ कर दे और माफ़ करना बे मौका न हो। अपितु उससे

कोई सुधार पैदा होता हो तो ऐसा व्यक्ति ख़ुदा से प्रतिफल पाएगा। ऐसा ही इंजील कहती है कि किसी नामुहरम की ओर कामवासना से न देख परन्तु क़ुरआन कहता है कि नामुहरम की ओर कदापि न देख न कामवासना से और न कामवासना के बिना। क्योंकि पवित्र हृदय रहने के लिए इससे उत्तम (तर) कोई उपाय नहीं है।

इसी प्रकार क़ुरआन गहरी हिक्मतों से भरा हुआ है और प्रत्येक शिक्षा में इंजील की अपेक्षा वास्तविक नेकी के सिखाने के लिए आगे क़दम रखता है। विशेष तौर पर सच्चे और अपरिवर्तनीय ख़ुदा के देखने का दीपक तो क़ुरआनही के हाथ में है। यदि वह दुनिया में न आया होता तो ख़ुदा जाने दुनिया में सृष्टि पूजा की संख्या किस नंबर तक पहुँच जाती। अतः धन्यवाद का स्थान है कि ख़ुदा का एकेश्वरवाद (वहदानियत) जो पृथ्वी से गुम हो गया था दोबारा स्थापित हो गया।

और फिर दूसरा धन्यवाद यह है कि वह ख़ुदा जो कभी अपने अस्तित्व को बिना तर्क नहीं छोड़ता। वह जैसा कि समस्त नबियों पर प्रकट हुआ और प्रारम्भ से पृथ्वी को अन्धकार में पाकर प्रकाशित करता आया है उसने इस युग को भी अपनी दानशीलता से वंचित नहीं रखा। अपितु जब दुनिया को आकाशीय प्रकाश से दूर पाया तब उसने चाहा कि पृथ्वी की सतह को एक नई मारिफ़त से प्रकाशमान करे और नए निशान दिखाए और पृथ्वी को प्रकाशित करे।

तो उसने मुझे भेजा और मैं उसका धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे एक ऐसी सरकार की दया की छाया के नीचे जगह दी जिस की छाया के अन्तर्गत मैं बड़ी आज़ादी से अपना कार्य नसीहत और सदुपदेश का अदा कर रहा हूं। यद्यपि इस उपकारी

सरकार का प्रजाओं से प्रत्येक पर धन्यवाद आवश्यक है। परन्तु मैं सोचता हूं कि मुझ पर सर्वाधिक आवश्यक है। क्योंकि ये मेरे उच्च उद्देश्य जो जनाब क़ैसरा हिन्द की हुकूमत की छाया के नीचे सम्पन्न हो रहे हैं कदापि संभव न था कि वह किसी अन्य हुकूमत की छाया के नीचे सम्पन्न हो सकते। यद्यपि वह कोई इस्लामी सरकार ही होती।

अब मैं हुज़ूर महामहिम महारानी में अधिक बाधक नहीं होना चाहता और इस के समयों पर इस दुआ पर यह पत्र समाप्त करता हूं।

हे सामर्थ्यवान और कृपालु अपनी कृपा और उपकार से हमारी महामहिम महारानी को प्रसन्न रख जैसा कि हम उसकी दया की छाया के नीचे प्रसन्न हैं। और उस से नेकी कर जैसा कि हम उसकी नेकियों और उपकारों के नीचे जीवन व्यतीत कर रहे हैं। और इन निवेदनों पर कृपालुओं जैसा दया देने के लिए उसके हृदय में स्वयं इल्हाम कर कि प्रत्येक क़ुदरत और शक्ति तुझ ही को है।

आमीन- सुम्मा आमीन

निवेदक- ख़ाकसार मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद

क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर (पंजाब)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली

महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द (उसकी छाया हमेशा रहे) के जुबली के उत्सव पर दुआ और कृतज्ञता के उद्देश्य से मित्र लोगों का जल्सा

हम बड़ी प्रसन्नता पूर्वक इस बात को व्यक्त करते हैं कि महीम महारानी क़ैसरा हिन्द दामा ज़िल्लुहा के जुबली के उत्सव की ख़ुशी और कृतज्ञता अदा करने के लिए मेरी जमाअत के अधिकतर दोस्त दूर-दूर का फ़ासिला तय करके 9 जून 1897 ई. को ही क़ादियान आए। और यह सब 225 लोग थे तथा यहां के हमारे मुरीद और सदभावक भी उनके साथ सम्मिलित हुए, जिनसे एक बड़ा गिरोह हो गया। और वे सब 20 जून 1897 ई. को इस मुबारक उत्सव में परस्पर मिलकर दुआ और ख़ुदा के धन्यवाद में व्यस्त हुए। और जैसा कि विज्ञापन वाइस प्रेसीडेन्ट जनरल कमेटी अहले इस्लाम हिन्द जनाब खान साहिब मुहम्मद हयात खान साहिब सी.एस.आई में इस बारे में निर्देश थे। ख़ुदा तआला की कृपा से उसी के अनुसार सब ख़ुशी की रस्में उत्तम तौर पर प्रकटन में आईं। अत: 20 जून 1897 ई. को हमारी ओर से मुबारक बादी की तार वाइसराय गवर्नर जनरल किश्वरे हिन्द स्थान शिमला रवाना की गई। और उसी दिन से 22 जून 1897ई. तक ग़रीबों और दरवेशों को निरन्तर खाना दिया गया। परन्तु 21 जून 1897ई. को इस ख़ुशी की अभिव्यक्ति के लिए एक बड़ी दावत का सामान हुआ तथा इस कस्बे के ग़रीब और दरवेश दावत के लिए बुलाए गए। और जैसा कि शादियों के अवसर पर

भोजन पकाए जाते हैं, ऐसे ही बड़े तकल्लुफ़ से भोजन तैयार हुए और समस्त उपस्थित लोगों को खिलाए गए। उस दिन तीन सौ से अधिक आदमी थे जो दावत में सम्मिलित हुए। फिर 22 जून की रात को चिराग़ा हुआ और कूचों, गलियों, मस्जिदों और घरों में शाम होते ही सामान्य दृष्टि स्थल पर दीपक जलाए गए और गरीबों को अपने पास से तेल दिया गया। इसके अतिरिक्त प्रसन्नता की अभिव्यक्ति के लिए सामान्य दावत में लोगों को सम्मिलित किया गया।

अत: यह समस्त मित्रगणों का जल्सा जिन्होंने बड़ी प्रसन्नता से परस्पर चंदा करके इसका प्रबंध किया। 20 जून 1897 ई. से आरम्भ हुआ और 22 जून 1897 ई. की शाम तक बड़ी धूम-धाम से इस का प्रबंध रहा। फिर पहले दिन में तो समस्त जमाअत ने जो हमारे मुरीदों की जमाअत है जिनके नीचे नाम लिखे जाएंगे बड़े सच्चे हृदय से हुज़ूर क़ैसर और शाही ख़ानदान तथा ब्रिटिश सरकार के पक्ष में समृद्धि और ख़ुदा की कृपा की दुआएं कीं और फिर जैसा कि वर्णन किया गया और यदा कदा समस्त रस्में अदा की गईं। और ख़ुदा तआला का धन्यवाद है कि हमारी जमाअत ने जिसमें आदरणीय सरकारी कर्मचारी भी सम्मिलित थे। ऐसी निश्छलता, प्रेम, पूर्ण श्रद्धा, पूर्ण शौक़ और हर्षपूर्वक दुआएं कीं और कृतज्ञता व्यक्त की और ग़रीबों की दावत के प्रबंध में चंदे दिए और परस्पर चंदे से एक बड़ी राशि जमा करके बड़ी तत्परता, तल्लीनता तथा हार्दिक प्रसन्नता से समस्त प्रस्ताव जनरल कमेटी को अंजाम तक पहुंचाया कि उस से बढ़कर विचार में नहीं आ सकता।

और वह भाषण जो दुआ और कृतज्ञता का महामहिम महारानी

क़ैसरा हिन्द सुनाया गया जिस पर लोगों ने बड़ी ख़ुशी से आमीन के नारे लगाए वह छः भाषाओं में वर्णन किया गया ताकि हमारे पंजाब के देश में जितने मुसलमान किसी भाषा में पहुँच रखते हैं उन समस्त भाषाओं से धन्यवाद अदा हो। उनमें से एक उर्दू में भाषण था जो धन्यवाद और दुआ पर आधारित था जो सामान्य जल्से में सुनाया गया। और फिर अरबी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी, पंजाबी और पश्तो में भाषण लिखकर पढ़े गए। उर्दू में इसलिए कि वह अदालत की बोली और शाही प्रस्ताव के अनुसार दफ्तरों में रिवाज प्राप्त है। और अरबी में इसलिए कि वह ख़ुदा की बोली है जिससे दुनिया की समस्त भाषाएं निकलीं और जो उम्मुल अलसिनः (समस्त भाषाओं की जननी) और दुनिया की समस्त भाषाओं की मां है जिसमें ख़ुदा की अन्तिम किताब प्रजा की भलाई के लिए पवित्र क़ुरआनआया। और फ़ारसी में इसलिए कि वह पहले इस्लामी बादशाहों की यादगार है जिन्होंने इस देश में लगभग 700 वर्ष तक शासन किया और अंग्रेज़ी में इसलिए कि वह हमारी महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द और उसके आदरणीय पदाधिकारियों की भाषा है जिसके न्याय और उपकार के हम कृतज्ञ हैं। और पंजाबी में इसलिए कि वह हमारी मातृभाषा है जिसमें धन्यवाद करना आवश्यक है और पश्तो में इसलिए कि वह हमारी भाषा और फ़ारसी भाषा में एक रोक और सरहदी समृद्धि का निशान है।

इस उत्सव पर एक कृतज्ञता की पुस्तक जनाब क़ैसरा हिन्द के लिए लिख कर और छाप कर उसका नाम तुहफ़ा क़ैसरिया रखा गया और उसकी कुछ जिल्दें अत्यन्त सुन्दर जिल्द करा के उनमें से एक हज़रत क़ैसरा हिन्द की सेवा में भेजने के लिए डिप्टी कमिश्नर

साहिब की सेवा में भेजी गई और एक पुस्तक बहुज़ूर वाइसराय गवर्नर जनरल किश्वरे हिन्द (हिन्द देश) रवाना हुई और एक बहुज़ूर नवाब लेफ्टीनेन्ट गवर्नर पंजाब भेजी गई। अब वे दुआएं जो छ: भाषाओं में की गईं नीचे लिखी जाती हैं। तत्पश्चात उन समस्त दोस्तों के नाम दर्ज किए जाएंगे जो सफ़र के कष्ट उठा कर इस जल्से के लिए क़ादियान में पधारे और प्रचण्ड गर्मी में इस ख़ुशी के जोश में कष्ट उठाए यहां तक कि एक विशाल गिरोह एकत्र होने के कारण इतनी चारपाइयां न मिल सकीं तो बड़ी ख़ुशी से तीन दिन तक अधिकाँश दोस्त ज़मीन पर सोते रहे। जिस निश्छलता और प्रेम तथा सच्चे दिल के साथ मेरी जमाअत के प्रतिष्ठित दोस्तों ने इस ख़ुशी की रस्म को अदा किया मेरे पास वे शब्द नहीं कि मैं वर्णन कर सकूं।

मैं अपने पहले वर्णन में यह ज़िक्र भूल गया था कि इस जल्से के उत्सव में 22 जून 1897 ई. को हमारी जमाअत के चार मौलवी साहिबान ने उठ कर सामान्य लोगों को जनाब महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द के आज्ञापालन और सच्ची वफ़ादारी की प्रेरणा दी अत: सर्वप्रथम अख्वैम मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने उठ कर इस बारे में बहुत भाषण दिया फिर बिरादरम हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब भैरवी ने भाषण दिया। फिर इनके बाद बिरादरम मौलवी बुरहानुद्दीन साहिब जेहलमी उठे और उन्होंने पंजाबी में भाषण देकर सामान्य लोगों को महामहिम महारानी के आज्ञापालन के लिए बहुत प्रेरणा दी। इनके बाद मौलवी जमालुद्दीन साहिब सय्यदवाला ज़िला-मिंटगुमरी ने उठकर पंजाबी में भाषण दिया। परन्तु उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम जिनको मूर्ख मुसलमान

अब तक ख़ूनी के रूप में प्रतीक्षा कर रहे हैं वह वास्तव में मृत्यु पा गए हैं। अर्थात् ऐसे विचार कि किसी समय महदी और मसीह के आने से मुसलमान खून बहाएंगे सही नहीं है और सामान्य लोगों को सौभाग्य और नेक चलनी की प्रेरणा दी गई। तथा इस मुबारक अवसर पर साठ सत्तर लोगों ने प्रत्येक गुनाह और बदचलनी से दूर रह कर तौब: की यहां तक कि उनके रोने और गिड़गिड़ाने से मस्जिद गूँज रही थी।

अब नीचे वे दुआएं छ: भाषाओं में दर्ज की जाती हैं।

लेखक- मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

23 जून 1897 ई.

दुआ और आमीन
उर्दू भाषा में
हिन्दी अनुवाद

हे श्रद्धावान, निष्ठावान और आडम्बर रहित प्रेमियो और निष्कपट दोस्तो! जिस बात के लिए आप सब सज्जन कष्ट उठाकर इस ख़ाकसार के साथ क़ादियान पहुंचे हैं वह यह है हम महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द के उपकारों को स्मरण करके उनकी साठ साला हुकूमत पूरी होने पर उस ख़ुदा तआला का धन्यवाद करें जिसने केवल ऐसी उपकारी महारानी की छाया के नीचे हमें हर प्रकार के अमन से रखा। जिससे हमारे प्राण, माल और इस्मत अत्याचारियों और ज़ालिमों के आक्रमण से अमन में रहे। और हम सम्पूर्ण आज़ादी से ख़ुशी तथा आराम के साथ जीवन यापन करते रहे और इस समय हमें कृतज्ञता के कर्तव्य की अदायगी के उद्देश्य से महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द के लिए ख़ुदा के दरबार में दुआ करनी चाहिए कि जिस प्रकार हम ने उनकी हुकूमत में अमन पाया और उनकी छाया के नीचे रहकर प्रत्येक दुष्ट की दुष्टता से सुरक्षित रहे। इसी प्रकार ख़ुदा तआला जनाब महारानी को भी उत्तम प्रतिफल प्रदान करे और उनको प्रत्येक बला और आघात से सुरक्षित रखे तथा सौभाग्य और सफलता में उन्नति प्रदान करे। और उन सब मनोकामनाओं, समृद्धियों और प्रसन्नताओं के साथ ऐसी कृपा करे कि इन्सान की उपासना करने से उन्हें छुड़ा दे। हे दोस्तो! क्या तुम ख़ुदा की क़ुदरत से आश्चर्य करते हो और क्या तुम इस बात को असंभव समझते हो कि हमारी महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द के दीन (धर्म) और दुनिया दोनों पर ख़ुदा की कृपा हो

जाए। हे अज़ीज़ो! उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा की श्रेष्ठताओं पर पूर्ण ईमान लाओ जिसने विशाल आकाशों को बनाया और पृथ्वी को हमारे लिए बिछाया और दो चमकते हुए दीपक हमारे आगे रख दिए जो सूर्य और चन्द्रमा हैं। अत: सच्चे दिल से ख़ुदा के दरबार में अपनी उपकारी महारानी क़ैसरा हिन्द के दीन (धर्म) और दुनिया दोनों के लिए दुआ करो। मैं सच-सच कहता हूं कि जब तुम सच्चे दिल से और रूह के जोश के साथ और पूरी आशा के साथ दुआ करोगे तो ख़ुदा तुम्हारी सुनेगा। अत: हम दुआ करते हैं और तुम आमीन कहो कि हे सर्वशक्तिमान जिसने अपनी हिकमत और हित से इस उपकारी महारानी की छाया के नीचे एक लम्बा भाग हमारे जीवन का व्यतीत कराया और उसके द्वारा हमें सैकड़ों आपदाओं से बचाया उसको भी आपदाओं से बचा कि तू हर बात पर सामर्थ्यवान है। हे सामर्थ्यवान और शक्तिशाली! जैसा कि हम इस की छाया के नीचे रह कर कई आघातों से बचाए गए इसको भी आघातों से बचा कि सच्ची बादशाही और क़ुदरत और हुकूमत तेरी ही है। हे सामर्थ्यवान और शक्तिशाली! हम तेरी असीम क़ुदरत पर दृष्टि करके एक और दुआ के लिए तेरे सामने हिम्मत करते हैं कि हमारी उपकारी क़ैसरा हिन्द को सृष्टि उपासना के अन्धकार से छुड़ा कर 'ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह' पर उसका अन्त कर। हे अद्भुत कुदरतों वाले! हे गहरे अधिकारों वाले ऐसा ही कर। हे मेरे माबूद ये सारी दुआएं स्वीकार कर। सम्पूर्ण जमाअत कहे आमीन।

हे दोस्तो! हे प्यारो! ख़ुदा की जनाब बड़ी कुदरतों वाली जनाब है। दुआ के समय उससे निराश मत हो। क्योंकि उस अस्तित्व में

असीम कुदरतें हैं और सृष्टि के बाह्य एवं आन्तरिक पर उस के अद्भुत अधिकार हैं। इसलिए तुम न कपटाचारियों की तरह अपितु सच्चे दिल से ये दुआएं करो। क्या तुम समझते हो कि बादशाहों के दिल ख़ुदा के अधिकार से बाहर हैं? नहीं अपितु प्रत्येक बात उसके इरादे के अधीन और उसके हाथ के नीचे है। अतः तुम अपनी उपकारी महारानी क़ैसरा हिन्द के लिए सच्चे दिल से दुनिया के आराम भी चाहो और आख़िरत (परलोक) के आराम भी। यदि वफ़ादार हो तो रातों को उठ कर दुआएं करो और सुबह को उठकर दुआएं करो। और जो लोग इस बात के विरोधी हों उनकी परवाह न करो। चाहिए कि तुम्हारी प्रत्येक बात श्रद्धा और निष्ठा से हो तथा किसी बात में कपट की मिलौनी न हो। संयम और ईमानदारी ग्रहण करो और भलाई करने वालों से सच्चे दिल से भलाई चाहो। ताकि ख़ुदा तुम्हें बदला दे। क्योंकि इन्सान को प्रत्येक नेकी के काम का नेक बदला मिलेगा। अब अधिक शब्दों को एकत्र करने की आवश्यकता नहीं। यही दुआ है कि ख़ुदा हमारी ये दुआएं सुने।

वस्सलाम

सूची

जल्सा डायमण्ड जुबली स्थान क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर में उपस्थित दोस्तों के नाम बहुज़ूर इमाम हज़रत मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद चंदा और बिना चंदा सहित। और अनुपस्थित लोगों के नाम जिन्होंने चन्दा दिया।

20 जून 1897 ई. से 22 जून 1897 ई.

क्रम संख्या	नाम	निवास	चन्दे की राशि	विवरण
1	हज़रत अक्दस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब महदी-व-मसीह मौऊद	क़ादियान		
2	हज़रत मौलवी हकीम नूरुद्दीन साहिब भैरवी	क़ादियान		
3	मौलवी अब्दुल करीम साहिब	सियालकोट		
4	मौलवी बुरहानुद्दीन साहिब	जेहलम		
5	मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब	अमरोहा, ज़िला मुरादाबाद		
6	हकीम फ़ज़्लुद्दीन साहिब हर दो कबीलों सहित	भेरा		
7	ख्वाजा कमालुद्दीन साहिब बी.ए. प्रोफेसर इस्लामिया कालेज	लाहौर		
8	मुफ़्ती मुहम्मद सादिक साहिब भेरवी क्लर्क एकाउंटेंट	लाहौर		
9	मिर्ज़ा अय्यूब बेग साहिब बी.ए. क्लास लाहौर कालेज अपने कबीले सहित	कलानौर		
10	ख़लीफ़ा रजबुद्दीन साहिब ताजिर बिरज	लाहौर		
11	हकीम मुहम्मद हुसैन साहिब	लाहौर		

12	ख़्वाजा जमालुद्दीन साहिब बी.ए. रनबीर कालेज जम्मू	लाहौर		
13	हकीम फ़ज़ल इलाही साहिब	लाहौर		
14	मुंशी मौला बख़्श साहिब क्लर्क दफ़्तर रेलवे	लाहौर		
15	मुंशी नबी बख़्श साहिब क्लर्क दफ़्तर रेलवे	लाहौर		
16	मुंशी मुहम्मद अली साहिब क्लर्क दफ़्तर रेलवे	लाहौर		
17	मुंशी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. प्रोफेसर ओरियन्टल कालेज	लाहौर		
18	शेख़ रहमतुल्लाह साहिब सौदागर रखत	लाहौर		
19	मुंशी करम इलाही साहिब मुहतमिम मदरसा इस्लाम	लाहौर		
20	मियाँ मुहम्मद अज़ीम साहिब क्लर्क रेलवे	लाहौर		
21	हाफ़िज़ फ़ज़ल अहमद साहिब पुत्र सहित	लाहौर		
22	हाफ़िज़ अली अहमद साहिब पुत्र सहित	लाहौर		
23	शेख़ अब्दुल्लाह साहिब नव मुस्लिम मुंसरिम शफाखाना अंजुमन हिमायत इस्लाम	लाहौर		
24	अली मुहम्मद साहिब विद्यार्थी बी.ए. क्लास	लाहौर		
25	मुंशी अब्दुर्रहमान साहिब क्लर्क रेलवे दफ़्तर	लाहौर		
26	मुंशी मेराजुद्दीन साहिब जनरल ठेकेदार	लाहौर		
27	मुंशी ताजुद्दीन साहिब क्लर्क रेलवे दफ़्तर	लाहौर		
28	शेख़ दीन मुहम्मद साहिब	लाहौर		
29	हकीम शेख़ नूर मुहम्मद साहिब नव मुस्लिम	लाहौर		
30	हकीम मुहम्मद हुसैन साहिब परवेज़ प्रोपराइटर कारखाना रफीकुस्सेहत	लाहौर		
31	ताजुद्दीन साहिब विद्यार्थी मदरसा इस्लामियत	लाहौर		
32	अब्दुल्लाह साहिब विद्यार्थी मदरसा इस्लामियत	लाहौर		

33	मौला बख़्श साहिब पटौली	लाहौर		
34	क़ाज़ी ग़ुलाम हुसैन साहिब भेरवी विद्यार्थी आर्ट स्कूल	लाहौर		
35	हाजी शहाबुद्दीन साहिब	लाहौर		
36	चिरागुद्दीन साहिब वारिस मियाँ मुहम्मद सुल्तान	लाहौर		
37	अह्मदुद्दीन साहिब डोरी बाफ़	लाहौर		
38	जमालुद्दीन साहिब कातिब	लाहौर		
39	मुहम्मद आज़म साहिब कातिब	लाहौर		
40	सैफुल मुलूक साहिब	लाहौर		
41	मियाँ सुलतान साहिब टेलर मास्टर	लाहौर		
42	मियाँ ग़ुलाम मुहम्मद साहिब क्लर्क छापाखाना	लाहौर		
43	मुज़फ्फरुद्दीन साहिब	लाहौर		
44	ख्वाजा मुहियुद्दीन साहिब ताजिर पश्मीना	लाहौर		
45	मुहम्मद शरीफ़ साहिब विद्यार्थी इस्लामिया कालेज	लाहौर		
46	अब्दुल हक़ साहिब इस्लामिया कालेज	लाहौर		
47	अब्दुल मजीद साहिब इस्लामिया कालेज	लाहौर		
48	ग़ुलाम मुहियुद्दीन साहिब जिल्दबंद सिविल एंड मिलिट्री गज़ट	लाहौर		
49	नाजुद्दीन साहिब	लाहौर		
50	शब्बीर अहमद साहिब	लाहौर		
51	नजीर अहमद साहिब	लाहौर		
52	डॉक्टर करम इलाही साहिब	लाहौर		
53	शेख़ मुहम्मद खान साहिब विद्यार्थी बी.ए. क्लास	लाहौर		
54	ग़ुलाम मुहियुद्दीन साहिब विद्यार्थी बी.ए. क्लास	लाहौर		
55	शेर अली साहिब विद्यार्थी बी.ए. क्लास	लाहौर		
56	साहिबज़ादा सिराजुल हक़ साहिब जमाली नोमानी	लाहौर		
57	क़ाज़ी मुहम्मद यूसुफ़ अली साहिब नोमिनी परिवार सहित सारजेन्ट तौसाम	हिसार		

58	शेख़ फैज़ुल्लाह साहिब खालिदी अल कुरैशी नायब दारोगा रियासत	नाभा		
59	सय्यद नासिर नवाब साहिब देहलवी पेंशनर	क़ादियान		
60	मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब विद्यार्थी इस्लामिया कालेज लाहौर	क़ादियान		
61	मुहम्मद इस्माईल साहिब सरसावी विद्यार्थी	क़ादियान		
62	शेख़ अब्दुर्रहीम साहिब नव मुस्लिम विद्यार्थी	क़ादियान		
63	शेख़ अब्दुर्रहमान साहिब नव मुस्लिम विद्यार्थी	क़ादियान		
64	शेख़ अब्दुल अज़ीज़ साहिब नव मुस्लिम विद्यार्थी	क़ादियान		
65	ख़ुदा यार साहिब नव मुस्लिम विद्यार्थी	क़ादियान		
66	गुलाबुद्दीन साहिब लोई बाफ	क़ादियान		
67	इस्माईल बेग साहिब प्रेसमैन	क़ादियान		
68	इमामुद्दीन साहिब	क़ादियान		
69	साहिबज़ादा इफ्तिखार अहमद साहिब लुधियानवी	क़ादियान		
70	साहिबज़ादा मंज़ूर मुहम्मद साहिब लुधियानवी	क़ादियान		
71	साहिबज़ादा मज़हर कय्यूम साहिब लुधियानवी	क़ादियान		
72	मौलवी अब्दुर्रहमान साहिब खेवाल ज़िला	जेहलम		
73	सय्यद खसीलत अली शाह साहिब डिप्टी इंस्पेक्टर	गुजरात		
74	सय्यद आमिर अली शाह साहिब सारजेन्ट प्रथम	सियालकोट		
75	हकीम मुहम्मदुद्दीन साहिब नक़ल नवीस सदर	सियालकोट		
76	मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहिब टेलर मास्टर	सियालकोट		
77	शेख़ फ़ज़ल करीम साहिब अत्तार	सियालकोट		
78	ग़ुलाम मुहियुद्दीन साहिब ताजिर चोब	सियालकोट		
79	शेख़ हुसैन बख़्श खय्यात	क़ादियान		
80	अब्दुल्लाह साहिब	क़ादियान		
81	अब्दुर्रहमान साहिब	क़ादियान		
82	हाफ़िज़ अहमदुल्लाह साहिब	क़ादियान		

83	करम दाद साहिब	क़ादियान		
84	सय्यद इरशाद अली साहिब विद्यार्थी	सियालकोट		
85	मौलवी मुहम्मद अब्दुल्लाह खान साहिब वज़ीराबादी टीचर कालेज	पटियाला		
86	हाफ़िज़ नूर मुहम्मद साहिब सारजेन्ट पल्टन न. 4 रियासत	पटियाला		
87	मुहम्मद यूसुफ़ साहिब खराती	पटियाला		
88	हाफ़िज़ मलिक मुहम्मद साहिब	पटियाला		
89	अब्दुल हमीद साहिब	पटियाला		
90	मुहम्मद अकबर खान साहिब सिन्नौरी	पटियाला		
91	ख़लीफ़ा नूरुद्दीन साहिब ताजिर क़ुतुब रियासत	जम्मू		
92	अल्लाह दित्ता साहिब ताजिर क़ुतुब रियासत	जम्मू		
93	मौलवी मुहम्मद सादिक साहिब टीचर रियासत	जम्मू		
94	मियाँ नबी बख़्श साहिब रफूगर	अमृतसर		
95	मुहम्मद इस्माईल साहिब ताजिर पश्मानी कटरा आहलूवालिया	अमृतसर		
96	मियाँ मुहम्मद्दीन साहिब अपील नवीस	सियालकोट		
97	मियाँ इलाही बख़्श साहिब मोहल्ला माश्कियां	गुजरात		
98	मियाँ चिरागुद्दीन साहिब कटरा आहलूवालिया	अमृतसर		
99	मुंशी रोड़ा साहिब नक्शा नवीस अदालत रियासत	कपूरथला		
100	मुंशी ज़फर अहमद साहिब अपील नवीस रियासत	कपूरथला		
101	मुंशी रुस्तम अली साहिब कोर्ट इंस्पेक्टर	गुरदासपुर		
102	नवाब खान साहिब	जम्मू		
103	मियाँ अब्दुल ख़ालिक साहिब रफूगर	अमृतसर		
104	शेख़ अब्दुल हक साहिब ठेकेदार	लुधियाना		
105	मुहम्मद हसन साहिब अत्तार	लुधियाना		
106	मुंशी मुहम्मद इब्राहीम साहिब ताजिर लुंगा गबरून	लुधियाना		
107	मिस्त्री हाजी इस्मतुल्लाह साहिब	लुधियाना		

108	क़ाज़ी ख्वाजा अली साहिब ठेकेदार शकरम	लुधियाना		
109	मौलवी अबू यूसुफ़ मुबारक अली साहिब इमाम मस्जिद	सियालकोट		
110	अब्दुल अज़ीज़ खान विद्यार्थी पुत्र अब्दुर्रहमान साहिब	रावलपिंडी		
111	शेख़ नूर अहमद साहिब मालिक रियाज़ हिन्द प्रेस	अमृतसर		
112	शेख़ ज़हूर अहमद साहिब संग्साज़ प्रेस कलानौर	अमृतसर		
113	मिर्ज़ा रसूल बेग साहिब कलानौर	गुरदासपुर		
114	हाफ़िज़ अब्दुर्रहीम साहिब	बटाला		
115	डाक्टर फैज़ कादिर साहिब	बटाला		
116	शेख़ मुहम्मद जाँ साहिब ताजिर	वजीराबाद		
117	मुंशी नवाबुद्दीन साहिब मास्टर	दीना नगर		
118	ख़लीफ़ा अल्लाह दित्ता साहिब	दीना नगर		
119	मियाँ ख़ुदा बख़्श साहिब खय्यात छोकर ज़िला-	गुजरात		
120	मौलवी हाफ़िज़ अह्मदुद्दीन चक सिकंदर ज़िला-	गुजरात		
121	मियाँ अह्मदुद्दीन साहिब इमाम मस्जिद क़िला-दीदार सिंह	गुजरांवाला		
122	मियाँ जमालुद्दीन साहिब पश्मीना बाफ़	गुरदासपुर		
123	मुहम्मद अकबर साहिब ठेकेदार	बटाला		
124	मास्टर ग़ुलाम मुहम्मद साहिब बी.ए.टीचर	सियालकोट		
125	मियाँ बाग़ हुसैन साहिब	बटाला		
126	मियाँ नबी बख़्श साहिब पांडा	बटाला		
127	चौधरी मुंशी नबी बख़्श साहिब नम्बरदार	बटाला		
128	मौलवी खान मालिक साहिब खेवाल	जेहलम		
129	मियाँ खैरुद्दीन साहिब पश्मीना बाफ़ सेखवां ज़िला-	गुरदासपुर		
130	हकीम मुहम्मद अशरफ साहिब	बटाला		
131	शेख़ ग़ुलाम मुहम्मद साहिब विद्यार्थी ज़िला-	जालंधर		

132	हाफ़िज़ ग़ुलाम मुहियुद्दीन साहिब जिल्दसाज़	क़ादियान		
133	मियाँ इमामुद्दीन साहिब पश्मीना बाफ़	सेखवां		
134	अल्लादीन साहिब बद्दियाँ ज़िला-	गुरदासपुर		
135	शेख़ अब्दुर्रहीम साहिब नौकर रियासत	कपूरथला		
136	शेख़ मुहम्मदुद्दीन साहिब बूट फ़रोश	जम्मू		
137	मुहम्मद शाह साहिब ठेकेदार	जम्मू		
138	निजामुद्दीन साहिब दुकानदार-थह ग़ुलाम नबी	गुरदासपुर		
139	इमामुद्दीन साहिब दुकानदार	गुरदासपुर		
140	शेख़ फ़कीर अली साहिब ज़मींदार	गुरदासपुर		
141	शेख़ शेर अली साहिब ज़मींदार	गुरदासपुर		
142	शेख़ चिराग़ अली साहिब ज़मींदार	गुरदासपुर		
143	शहाबुद्दीन साहिब दुकानदार	गुरदासपुर		
144	मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहिब पटवारी सेखवां	गुरदासपुर		
145	मियाँ कुतुबुद्दीन साहिब खय्यात	गुरदासपुर		
146	मियाँ सुल्तान अहमद विद्यार्थी	गुजरात		
147	शेख़ अमीर बख़्श थह ग़ुलाम नबी	गुरदासपुर		
148	सय्यद निज़ाम शाह साहिब बाज़ीद चक	गुरदासपुर		
149	हाफ़िज़ मुहम्मद हुसैन साहिब डंगा	गुजरात		
150	बाबू गुल हसन साहिब क्लर्क रेलवे दफ़्तर	लाहौर		
151	हाफ़िज़ नूर मुहम्मद साहिब चक फ़ैज़ुल्लाह	गुरदासपुर		
152	हसन खान साहिब नौकर तोपखाना रियासत	कपूरथला		
153	मिर्ज़ा झंडा बेग पीररूवाला	गुरदासपुर		
154	मुहम्मद हुसैन विद्यार्थी मद्दा	अमृतसर		
155	मियाँ मुहम्मद आमिर कुण्ड तहसील-	खुशाव		
156	ग़ुलाम मुहम्मद विद्यार्थी	अमृतसर		
157	मुहम्मद इस्माईल थह ग़ुलाम नबी	गुरदासपुर		
158	शेख़ कुतुबुद्दीन साहिब कोटला फ़कीर	जेहलम		

159	मियाँ ग़ुलाम हुसैन नानावाई डेरा हज़रत अक्दस	क़ादियान		
160	शेख़ मौला बख़्श साहिब ताजिर चर्म डंगा	गुजरात		
161	क़ाज़ी मुहम्मद यूसुफ़ साहिब क़ाज़ी कोट	गुजरांवाला		
162	हाफ़िज़ अह्मदुद्दीन खय्यात डंगा	गुजरांवाला		
163	अब्दुल्लाह सौदागर विरंज	लाहौर		
164	मौलवी हाफ़िज़ करमुद्दीन साहिब पोड़ान वाला	गुजरात		
165	इबादत अली शाह सौदागर डोडा	गुरदासपुर		
166	मुहम्मद खान साहिब नम्बरदार जसरवाल	अमृतसर		
167	मियाँ इल्मुद्दीन साहिब कालू साई	गुजरात		
168	मियाँ करमुद्दीन साहिब डंगा	गुजरात		
169	शेख़ अह्मदुद्दीन साहिब डंगा	गुजरात		
170	मियाँ अह्मदुद्दीन साहिब डंगा	गुजरात		
171	मियाँ मुहम्मद सिद्दीक साहिब पश्मीना बाफ़ सेखवां	गुरदासपुर		
172	मियाँ सादिक हुसैन साहिब रियासत	पटियाला		
173	मौलवी फ़कीर जमालुद्दीन साहिब सय्यदवाला	मिंटगुमरी		
174	मौलवी अब्दुल्लाह साहिब ठट्ठा शेरका	मिंटगुमरी		
175	मियाँ अब्दुल अज़ीज़ विद्यार्थी	क़ादियान		
176	मियाँ अब्दुल्लाह थह ग़ुलाम नबी	गुरदासपुर		
177	मेहरुद्दीन साहिब खानसामां लाला मूसा ज़िला-	गुजरात		
178	करमुद्दीन साहिब खानसामां लाला मूसा ज़िला-	गुजरात		
179	इमामुद्दीन साहिब पटवारी लौचबे ज़िला-	गुरदासपुर		
180	फ़ज़ल इलाही साहिब नम्बरदार चक फैज़ुल्लाह ज़िला-	गुरदासपुर		
181	ग़ुलाम नबी साहिब चक फ़ैज़ुल्लाह ज़िला-	गुरदासपुर		
182	चिरागुद्दीन मैमार मौज़ा झंडी करां ज़िला-	गुरदासपुर		
183	क़ाज़ी नेमत अली साहिब ख़तीब बटाला	गुरदासपुर		
184	अहमद अली साहिब नम्बरदार चक वज़ीर ज़िला-	गुरदासपुर		

185	इमामुद्दीन साहिब थह ग़ुलाम नबी	गुरदासपुर		
186	मियाँ फ़कीर दरी बाफ़ चक फ़ैज़ुल्लाह ज़िला-	गुरदासपुर		
187	मियाँ अमीर दरी बाफ़ ज़िला-	गुरदासपुर		
188	शेख़ बरकत अली दुकानदार चक फ़ैज़ुल्लाह ज़िला-	गुरदासपुर		
189	बरकत अली साहिब पटवारी चक फ़ैज़ुल्लाह ज़िला-	गुरदासपुर		
190	मियाँ इमामुद्दीन साहिब चक फ़ैज़ुल्लाह ज़िला-	गुरदासपुर		
191	सय्यद आमिर हुसैन चक बाज़ीदा ज़िला-	गुरदासपुर		
192	शेख़ फ़ीरोज़ुद्दीन साहिब चक बाज़ीदा ज़िला-	गुरदासपुर		
193	शेख़ शेर अली साहिब चक बाज़ीदा ज़िला-	गुरदासपुर		
194	शेख़ अता मुहम्मद साहिब चक बाज़ीदा ज़िला-	गुरदासपुर		
195	सय्यद मुहम्मद शफ़ी साहिब चक बाज़ीदा ज़िला-	गुरदासपुर		
196	उमर चौकीदार चक बाज़ीदा ज़िला-	गुरदासपुर		
197	मौलवी अमीरुद्दीन साहिब मोहल्ला खोजा वाला	गुजरात		
198	मिस्त्री मुहम्मद उमर	जम्मू		
199	सय्यद वज़ीर हुसैन साहिब बजीद चक ज़िला-	गुरदासपुर		
200	मेहरूल्लाह शाह साहिब डोड़ा ज़िला-	गुरदासपुर		
201	सुल्तान बख़्श बदीचा ज़िला-	गुरदासपुर		
202	मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहिब उर्फ़ वज़ीर खान सब ओवरसियर	बल्लभ गढ़		
203	नूर मुहम्मद साहिब धौनी ज़िला-	मिंटगुमरी		
204	अब्दुर्रशीद सय्यिदवाला ज़िला-	मिंटगुमरी		
205	मौलवी अह्मदुद्दीन साहिब इमाम मस्जिद नामदार ज़िला-	लाहौर		
206	हाफ़िज़ मुईनुद्दीन साहिब	क़ादियान		
207	अब्दुल मजीद साहिब	कपूरथला		
208	मुहम्मद खान साहिब	कपूरथला		

209	मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब भागोराईं	कपूरथला		
210	निजामुद्दीन भागोराईं	कपूरथला		
211	फैज़ अहमद नज्जार	सियालकोट		
212	सय्यद गौहर शाह साहिब फेरूचीची ज़िला-	गुरदासपुर		
213	हकीम दीन मुहम्मद विद्यार्थी	क़ादियान		
214	शेख़ फ़ज़ल इलाही साहिब डाकिया	क़ादियान		
215	सुल्तान मुहम्मद साहिब बकराला ज़िला-	जेहलम		
216	अल्लाह दित्ता साहिब कम्बो ज़िला-	अमृतसर		
217	सय्यद आलिम शाह साहिब मौज़ा सय्यिदेलु ज़िला-	जेहलम		
218	मिस्टी हसनुद्दीन साहिब	सियालकोट		
219	मीरां बख़्श साहिब चूड़ीगर	बतला		
220	सेहर सानून साहिब सेखवां ज़िला-	गुरदासपुर		
221	हकीम जमालुद्दीन साहिब ताजिर	क़ादियान		
222	मुहम्मद इस्माईल साहिब विद्यार्थी	क़ादियान		
223	मुहम्मद इस्हाक साहिब विद्यार्थी	क़ादियान		
224	अब्दुल्लाह खान साहिब हरियाना ज़िला-	होशियारपुर		
225	करीम बख़्श मिस्त्री बेल चक ज़िला-	गुरदासपुर		
226	मिर्ज़ा बूटा बेग	क़ादियान		
227	मिर्ज़ा अहमद बेग	क़ादियान		
228	मुहम्मद हयात साहिब बतला	बटाला		
229	नूर मुहम्मद नौकर डाक्टर फ़ैज़ कादिर साहिब	बटाला		
230	शेख़ ग़ुलाम मुहम्मद साहिब ताजिर	अमृतसर		
231	बरकत अली साहिब नीचा बंद	बटाला		
232	ग़ुलाम हुसैन साहिब कक्केज़ई	बटाला		
233	रहीम बख़्श साहिब शानागर	जेहलम		
234	शेख़ ग़ुलाम अहमद साहिब इमाम मस्जिद झड़ियाँ ज़िला-	सियालकोट		

235	शेख़ इस्माईल साहिब इमाम मस्जिद झड़ियाँ ज़िला-	सियालकोट		
236	शेख़ करीम बख़्श साहिब काहने चक रियासत	जम्मू		
237	शेख़ चिरागुद्दीन साहिब रियासत	जम्मू		
238	मियाँ कन्नू तेली ततला ज़िला-	गुरदासपुर		
239	शेख़ मौला बख़्श साहिब ताजिर बूट	सियालकोट		
240	मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन साहिब	क़ादियान		
241	सय्यद अब्दुल अज़ीज़ साहिब	अंबाला		
242	मौलवी फ़ज़्लूद्दीन साहिब खारियां ज़िला-	गुजरात		
243	मौलवी फ़ज़्लूद्दीन साहिब ख़ुशाब ज़िला-	शाहपुर		
244	हाफ़िज़ रहमतुल्लाह साहिब करनपुर ज़िला-	देहरादून		
245	नूरुद्दीन साहिब नक्शा नवीस बारग मास्टरी	जेहलम		
246	मियाँ अब्दुल्लाह साहिब पटवारी सिन्नौरी रियासत	पटियाला		
247	मियाँ अब्दुल अज़ीज़ साहिब क्लर्क दफ़्तर नहर जमन पश्चमी	देहली		
248	डाक्टर बूढ़े खान साहिब असिस्टेंट सर्जन	कसूर		
249	मौलवी मुहम्मद हुसैन मदरसा इस्लामिया	रावलपिंडी		
250	मौलवी ख़ादिम हुसैन साहिब मदरसा इस्लामिया	रावलपिंडी		
251	बाबू अल्लादीन साहिब फाइर विभाग रोशनी	रावलपिंडी		
252	सय्यद इनायत अली साहिब	लुधियाना		
253	मुंशी ग़ुलाम हैदर साहिब डिप्टी इंस्पेक्टर पुलिस	नारोवल		
254	मौलवी इल्मुद्दीन साहिब	नारोवल		
255	मुंशी मुहरस अली साहिब क्लर्क सारजेन्ट पुलिस	नारोवल		
256	बाबू शाहदीन साहिब स्टेशन मास्टर वीना ज़िला-	जेहलम		
257	मुंशी अल्लाह दित्ता साहिब	सियालकोट		
258	मुंशी फ़तह मुहम्मद साहिब बुज़ बरदार पोस्ट मास्टर लय्या ज़िला-	डेरा इस्माईलखां		
259	शेख़ ग़ुलाम नबी साहिब दुकानदार	रावलपिंडी		

260	मुंशी मुज़फ्फर अली साहिब बिरादर मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब अमरोहा	डेरादून		
261	मियाँ अहमद हुसैन साहिब नौकर मियाँ मुहम्मद हनीफ सौदागर	डेरादून		
262	मौलवी मुहम्मद याक़ूब साहिब	डेरादून		
263	मुंशी अली गौहर खान साहिब ब्रांच पोस्ट मास्टर	जालंधर		
264	मुंशी मुहम्मद इस्माईल साहिब नक्शा नवीस कालिका रेलवे	अंबाला छावनी		
265	मौलवी ग़ुलाम मुस्तफ़ा साहिब मालिक प्रेस शोला तूर	बटाला		
266	बाबू मुहम्मद अफ़ज़ल साहिब नौकर रेलवे बुबासा	अफ्रीका		
267	चौधरी मुहम्मद सुल्तान साहिब पुत्र मौलवी अब्दुल करीम साहिब	सियालकोट		
268	सय्यद हामिद शाह साहिब क़ायम मुकाम सुपरिंटेंडेंट डी.सी.	सियालकोट		
269	सय्यद हकीम हुसामुद्दीन साहिब रईस	सियालकोट		
270	फ़ज़्लूद्दीन साहिब ज़रगर	सियालकोट		
271	हकीम अह्मदुद्दीन साहिब	सियालकोट		
272	शेख़ नूर मुहम्मद साहिब कुलाह साज़	सियालकोट		
273	मुहम्मदुद्दीन साहिब पटवारी तिरगढ़ी ज़िला-	गुजरांवाला		
274	सय्यद नवाब शाह साहिब टीचर	सियालकोट		
275	सय्यद चिराग शाह साहिब	सियालकोट		
276	चौधरी नबी बख़्श साहिब सारजेन्ट पुलिस	सियालकोट		
277	मुहम्मदुद्दीन साहिब	सियालकोट		
278	मुहम्मदुद्दीन साहिब जिल्दसाज़	सियालकोट		
279	अल्लाह बख़्श साहिब	सियालकोट		
280	शादी खान साहिब	सियालकोट		

281	चौधरी अला बख़्श साहिब	सियालकोट		
282	चौधरी फतेहदीन साहिब	सियालकोट		
283	अल्लाह रखा साहिब शाल बापु	बटाला		
284	करम इलाही साहिब कांस्टेबल	लुधियाना		
285	पीर बख़्श साहिब	लुधियाना		
286	मुंशी इलाह बख़्श साहिब	सियालकोट		
287	करमुद्दीन साहिब भोपाल वाला	सियालकोट		
288	मुंशी करम इलाही साहिब रिकार्ड क्लर्क	पटियाला		
289	मिर्ज़ा नियाज़ बेग साहिब जिलेदार नहर रशीदा ज़िला-	मुल्तान		
290	अल्लाहदित्ता साहिब शाल बाफ़	बटाला		
291	डाक्टर अब्दुल हकीम खान साहिब रियासत	पटियाला		
292	अजीज़ुल्लाह साहिब सरहिन्दी ब्रांच पोस्ट मास्टर	नादौन		
293	नवाब खान साहिब तहसीलदार	जेहलम		
294	अब्दुस्समद साहिब नौकर नवाब खान साहिब	जेहलम		
295	मौलवी नूर मुहम्मद साहिब मोकल ज़िला-	लाहौर		
296	सय्यद मेहदी हसन साहिब पसाल नवीस चौकी लोहला	लाहौर		
297	मौलवी शेर मुहम्मद साहिब हजन ज़िला-	शाहपुर		
298	बाबू नवाबुद्दीन साहिब हेडमास्टर स्कूल दीनानगर	गुरदासपुर		
299	वालिदा खैरुद्दीन सेखवां	गुरदासपुर		
300	रहीम बख़्श साहिब क्लर्क अस्तबल	संगरूर		
301	क़ारी मुहम्मद साहिब इमाम मस्जिद	जेहलम		
302	शर्फुद्दीन साहिब कोटला फ़कीर	जेहलम		
303	इल्मुद्दीन साहिब कोटला फ़कीर	जेहलम		
304	मौलवी मुहम्मद यूसुफ़ साहिब सिन्नौर	पटियाला		
305	अहमद बख़्श साहिब कोटला फ़कीर	जेहलम		

306	मुहम्मद इब्राहीम साहिब सिन्नौर	पटियाला		
307	इमामुद्दीन पटवारी साहिब सिन्नौर	पटियाला		
308	ग़ुलाम नबी उर्फ़ नबी बख़्श फैज़ुल्लाह चक	गुरदासपुर		
309	मुंशी अहमद साहिब क्लर्क बाड़ा सरकारी	पटियाला		
310	मौलवी मुहम्मद हसन खान साहिब टीचर	पटियाला		
311	शेख़ मुहम्मद हुसैन साहिब मुरादाबादी	पटियाला		
312	मिस्त्री अहमदुद्दीन साहिब	भेरा		
313	मिस्त्री इस्लाम अहमद साहिब	भेरा		
314	मियाँ फ़य्याज़ अली साहिब	कपूरथला		
315	मियाँ साहिबदीन साहिब खारियां	गुजरात		
316	मियाँ आलिमुदीन हज्जाम	भेरा		
317	बाबू करम इलाही साहिब डिप्टी सुपरिनटेंडेंट पागल खाना	लाहौर		
318	बाबू ग़ुलाम अहमद साहिब	लुधियाना		

जल्सा जुबली पर उपस्थित शेष लोगों के नाम

क्रम संख्या	नाम	स्थान
1	अब्दुर्रहमान नव मुस्लिम जालंधरी	
2	सय्यद इर्शाद अली सुपुत्र सय्यद खसीलत अली शाह साहिब डंगा	
3	अल्लाह दित्ता पुत्र नूर मुहम्मद कम्बोह	
4	अब्दुल्लाह पुत्र ख़लीफ़ा रजब दीन	लाहौर
5	ग़ुलाम मुहम्मद विद्यार्थी	डेरा बाबा नानक
6	रोशन दीन भेरा	
7	अल्लाह वधाया साहिब	पिंडी भट्टियां
8	शेख़ अहमद अली	चक बाज़ीद
9	नूर मुहम्मद ढोनी	
10	अब्दुर्रशीद	सय्यिद वाला
11	ग़ुलाम कादिर	क़ादियान
12	शाहनवाज़	डंगा
13	ग़ुलाम गौस	क़ादियान
14	शेख़ अमीर थह ग़ुलाम नबी	
15	गुलाब पुत्र मुहकम अहमदाबाद, ज़िला-	गुरदासपुर
16	ईदा पुत्र शादी	क़ादियान
17	दीन मुहम्मद	साड़ियाँ
18	सदरुद्दीन	क़ादियान
19	बुड्ढा	क़ादियान
20	हसीना	क़ादियान
21	लस्सू	क़ादियान

22	इमामुद्दीन	क़ादियान
23	ख्वाजा नूर मुहम्मद	क़ादियान
24	हामिद अली अराईं	क़ादियान
25	मीरा बख़्श	क़ादियान
26	फ़कीर मुहम्मद	फैज़ुल्लाह चक
27	ख्वाजा खेवन	क़ादियान
28	शर्फुद्दीन	क़ादियान
29	फतह दीन	कहार डल्ला
30	अब्दुल्लाह	क़ादियान
31	लब्भू	क़ादियान
32	लब्भा डोगर	खारा
33	शेख़ मुहम्मद	क़ादियान

नवाब मुहम्मद अली खान साहिब रईस मालेरकोटला के पत्र की नक़ल

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

तबीब रूहानी युग के मसीह मुकर्रम मुअज़्ज़म सल्लमकुमुल्लाह तआला

अस्सलामु अलैकुम-

हुज़ूर के आदेशानुसार जुबली का कुल हाल प्रस्तुत करता हूं:-

21,22 जून अर्थात् दो दिन जुबली के उत्सव के लिए निर्धारित हुए थे। चूंकि सरकार का आदेश था कि जुबली की कुल रस्में 22 जून 1897 ई. को पूरी की जाएँ। इसलिए सब कुछ 22 को किया जाना तय हुआ।

रियासत मालेरकोटला में जैसे महान रईस वफ़ादार रहे हैं वैसे ही महिलाएँ भी सरकार की वफादार श्रद्धालु रहे हैं। और बहुत से अवसरों पर इसका सबूत दिया है। अपितु कुछ स्थानों पर स्वयं लड़ाई में शामिल होकर सरकार की सहायता की है। अब चूंकि लड़ाई का अवसर तो जाता रहा है। अब युग की हालत के अनुसार हम लोग हर प्रकार से सेवा के लिए उपस्थित हैं। और हम ऐसा क्यों न करें जबकि इस सरकार का हम पर विशेष उपकार है। वह यह कि सिक्खों के उत्थान के युग में सिक्खों ने इस रियासत को बहुत परेशान किया था और यदि समय पर जनरल अख्तर लौनी साहिब दयावृष्टि की तरह न पधारते तो ये रियासत कभी की इस ख़ानदान से निकलकर सिक्खों के हाथों में होती। अत: हमारा ख़ानदान तो हर प्रकार से सरकार का

कृतज्ञ है और अब यह सिलसिला हुज़ूर के कारण और अधिक सुदृढ़ हो गया। अब जो सरकार के उपकार हमारी जमाअत पर हैं वह सफ़ेद दाने दार शक्कर का दोबारा आनन्द देने लगे। तो मुझ को आवश्यक हुआ कि अपने बराबर वालों से बढ़कर कुछ किया जाए।

प्रथम- क़रीब की मस्जिद पर दीपमाला और अपने रहने के मकान पर बहुत ज़ोर से किया गया। अपितु एक मकान पर शहर से बाहर जो एक क्षरवानीकोट नामक गांव मेरा है उस पर भी किया गया। मूल मकानों पर पहले सफेदी की गई और विभिन्न ढंग पर दीपक लगाए गए। और एक दीवार पर दीपकों में यह इबारत लिखी गई:-

GOD SAVE OUR EMPRESS

अर्थात् ख़ुदा तआला हमारी क़ैसरा को सलामत रखे। लगभग सम्पूर्ण शहर से बढ़कर हमारे यहां रोशनी का प्रबंध था। परन्तु उसी समय हवा के आने से वह रोशनी न हो सकी। इसलिए समस्त शहर में 23 को रोशनी हुई। परन्तु उस दिन भी हवा के कारण ऊँचे स्थान पर रोशनी न हो सकी।

द्वितीय- तीन ट्राईफिल आर्च, एक कूचे के शुरू में और दो अपने मकान के सामने बनाए गए। और उन पर निम्नलिखित सुनहरी इबारतें लिखकर लगाई गईं। प्रथम कूचे के शुरू में-

"जश्न डायमण्ड जुबली मुबारकबाद"

द्वितीय- अपने रहने के मकान के दरवाज़े में "WELCOME" अर्थात् 'स्वागतम' लिखा था।

तृतीय- दरवाज़े के सामने तीसरी मेहराब पर लिखा था

"क़ैसरा हिन्द की लम्बी आयु"

और सरवानी कोट में भी एक ट्राईफिल आर्च बनाई गई थी।

तृतीय- 22 जून को सांय छः बजे अपनी जमाअत के लोगों को एकत्र करके ख़ुदा तआला से महामहिम महारानी क़ैसरा हिन्द के शासन की नित्यता और लम्बी आयु और यह कि जिस प्रकार हुज़ूर महारानी ने हम पर उपकार किया है ख़ुदा तआला भी हुज़ूर महारानी पर उपकार करे और اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا। में दाख़िल करे अर्थात इस्लाम के सूर्य से वह भी लाभान्वित हों। दुआ की गई।

चतुर्थ- मैंने एक नोटिस अपनी जमाअत के लोगों को दिया था कि सब लोग जो कम से कम सामर्थ्य रखते हों वे भी सौ से कम दीपक न जलाएं और जिन के पास इतना खर्च करने को न हो तो वे मुझ से ले लें। अतः पांच लोगों को मैंने दीपमाला का खर्च दिया और शेष लोगों ने स्वयं दीपमाला की।

पंचम- मेरे बारे में सरदानीकोट में माफीदार थे उनको भी मैंने आदेश दिया कि दीपक जलाएं। अतः उन्होंने भी किया और यह ऐसी बात है कि रियासत के अन्य देहात में संभवतः ऐसा नहीं हुआ।

षष्टम- 23 जून को इस ख़ुशी में आतिशबाज़ी छोड़ी गई।

सप्तम- 22 जून की शाम को प्रतिष्ठित लोगों की दावत की गई।

अष्ठम- 23 को दरिद्रों को अनाज और नक़द खैरात (दान) की गई।

नवम- एक यादगार के स्थापित करने की भी स्कीम है। जब इसके बारे में फैसला होगा वह भी लिखूंगा।

25 जून 1897ई. लेखक

मालेरकोटला मुहम्मद अली खान

नोटः- हमने अपनी ओर से सब दोस्तों के नाम कोशिश करके दर्ज करा दिए हैं। अब यदि एक जो नाम रह गए हों तो इन्सानी भूल है।